पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

वार्षिक शुल्क : 60 रुपए

मातृवन्दना

ज्येष्ठ-आषाढ़, कलियुगाब्द 5114, जून, 2012

उद्धि के जल की गिनती नहीं, उच्च सूर्य पर दृष्टि ठहरती नहीं।
मुष्ठि में अग्नि ज्यों बंधता नहीं, त्यों शिवा विजित हो सकता नहीं।।

शिवाजी महाराज राज्याभिषेक

नारद जयंती पत्रकार सम्मान समारोह, शिमला - 2012

मंच पर उपस्थित
मुख्यमंत्री
प्रो. प्रेम कुमार धूमल
उत्तर क्षेत्र प्रचार प्रमुख
श्री नरेन्द्र कुमार
विश्व संवाद केंद्र प्रमुख
श्री दलेल सिंह ठाकुर

समारोह में
उपस्थित
पत्रकार
एवं
गणमान्य जन

सम्पादक के नाम पत्र
लेखन के लिए
कुल्लू के
श्री जोगिन्द्र ठाकुर
को सम्मानित करते
उत्तर क्षेत्र प्रचार प्रमुख
श्री नरेन्द्र कुमार

मुख्यमंत्री
प्रो. प्रेम कुमार धूमल
श्री प्रकाश चंद लोहमी को
वरिष्ठ पत्रकार सम्मान
से सम्मानित करते हुए।

इस अंक में

शस्त्रैहतास्तु पुरुषाः न हताः भवन्ति, प्रज्ञाहताश्च नितरां सुहताः भवन्ति
शस्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकम्, प्रज्ञा कुलं च विभवं च यशश्च हन्ति।

अर्थ : शस्त्र के द्वारा मारे जाने वाले व्यक्ति सही अर्थों में नहीं मारे जाते हैं, बल्कि बुद्धि के द्वारा मारे जाने वाले ही सही अर्थों में निहत होते हैं, क्योंकि शस्त्रों के द्वारा तो व्यक्ति का केवल शरीर ही नष्ट होता है किन्तु बुद्धि द्वारा उसके कुल वैभव व यश का नाश होता है।

वर्ष : 12 अंक : 06

मातृवन्दना

मासिक

ज्येष्ठ-आषाढ़, कलियुगाब्द 5114, जून, 2012

परामर्शदाता
सुभाष चन्द्र सूद

✡

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

सह-सम्पादक
कृष्ण मुरारी

✡

वार्षिक शुल्क
साठ रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
शर्मा भवन, नया
शिमला-171 009
दूरभाष व फैक्स :
0177-2671990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला-171009 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक एक ऐतिहासिक घटना.....8

गुलामी ने स्वत्व की भावना को इस तरह समाप्त कर दिया था कि हिन्दू भी सुल्तानराव, फकीरराव आदि नाम धारण करने में भूषण मानने लगे थे। सारा समाज व्यथित था। किसी प्रतापी पुरुष के आगमन की उसे बड़ी उत्कंठा से प्रतीक्षा थी। ठीक इसी समय शक संवत् 1549 के फाल्गुन-मास के कृष्ण पक्षीय तृतीया की प्रातःकाल शिवनेरी किले पर माता जीजाबाई ने शिवाजी को जन्म दिया।

सम्पादकीय	राष्ट्र के नवजागरण का प्रतीक	5
प्रेरक प्रसंग	चिंतामुक्त जीवन	6
चिन्तन	मीडिया और हिन्दी	7
संगठनम्	सूचना संचार में देवर्षि नारद के आदर्शों को अपना जरूरी	12
देवभूमि	10 लाखों छात्रों को मिलेगी वर्दी	15
देश-प्रदेश	35 रुपये पर जी रही आधी से ज्यादा आबादी	16
घूमती कलम	संसद में कार्टून विवाद	19
दृष्टि	उजाड़ पहाड़ बना हरा भरा जंगल	20
काव्य-जगत	हम भी तो कुछ देना सीखें	22
महिला जगत	केवल कानून और अदालतों से नहीं होगी नारी रक्षा	23
स्वास्थ्य	देशी गाय ने बचाए मरणासन्न के प्राण	24
कृषि	बीज में छिपी है खाद्य सम्प्रभुता	25
युवा-पथ	अंतरिक्ष विज्ञान में कॅरिअर	26
कहानी	बड़ा आदमी	27
प्रतिक्रिया	गंगा से न करें खिलवाड़	29
समसामयिक	हिमाचल बना चर्च की रणनीति का नया अखाड़ा	30
विश्व दर्शन	अमेरिका में भी है एक हस्तिनापुर	32
बाल जगत	मीठे बोल होते हैं अनमोल	34

पाठकीय

पाठकों के पत्र.....

'राष्ट्र के समक्ष चुनौतियां' विशेषांक (मातृवन्दना) वैचारिक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है। भारत वीरों और महापुरुषों की धरती रही है। यहां अनेक महापुरुषों ने समय-समय पर अपने आंदोलन से देश व विश्व का मार्गदर्शन किया है। हमारे देश में अपने व्यक्तित्व से महान पुरुषों ने देश का कल्याण किया है। हमें भी आज जरूरत है देश हित में योगदान देने की। हमारे देश में महापुरुषों के उदाहरणों की कोई कमी नहीं है। कमी है सिर्फ मानसिकता बनाने की। हम अपने निजी जीवन से हटकर राष्ट्रहित में कुछ नया कर जाएं। स्वामी विवेकानंद जी जैसे महान पुरुष इतनी छोटी उम्र में अग्रदूत बन गए और हमारे लिये उदाहरण छोड़ गए। हर युवा को भ्रष्टाचार, असत्य, अधर्म, आतंक के विरुद्ध अपना योगदान देना चहिए। यही हमारी सच्ची भारतीयता होगी।

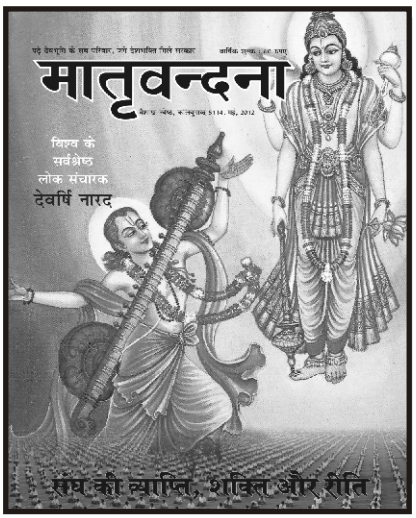

– **हेमराज राणा**, मिल्ला, सिरमौर

जल संचयन

वर्षा जल संचयन की बात हमने मानी है,
कृत्रिम भूजल पुनर्भरण करने की ठानी है,
बावड़ी, कुआं, तालाब, पोखर का पानी,
जंगल, वनस्पति खेतों में लाये हरियाली,
भू-जल दोहन को नियम से अपनाओ!
भू-जल बढ़ाओ और जीवन बचाओ!
आज बचाए पानी ने, इसे सबने बचाना है,
बाग-बगीचे, फूलों पर, भंवरों ने गुनगुनाना है,
परागण होगा इससे, फसलें होंगी भरपूर
निर्धनता, भूख लाचारी सब होगी दूर,
आओ! मिलकर जल संचयन अपनाएं,
भू-जल पुनर्भरण कार्य, सफल बनाएं।

– **चेतन कौशल नूरपुरी**
गांव व डाक सुल्यानी, नूरपुर, कांगड़ा

मातृवन्दना के मई अंक में घूमती कलम के अंतर्गत विभिन्न चैनलों पर सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धारावाहिकों का उल्लेख किया गया। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले उपनिषद् गंगा से हमें अपनी आध्यात्मिक संस्कृति का पता चलता है।

आज के आधुनिक युग में यहां हम सारा दिन भागदौड़ में लगे रहते हैं वहीं हम अपने नैतिक मूल्यों से या यूं कहें अपने पुराने धार्मिक वेदों और उपनिषदों से दूर हो रहे हैं। दूरदर्शन पर हर रविवार को प्रसारित होने वाले धारावाहिक उपनिषद गंगा हमारे वेदों और उपनिषदों को हमारे जीवन के करीब लाने का प्रयास कर रहा है। इसमें वेदों और उपनिषदों के बारे में ज्ञानवर्धक बातें बताई जा रही है जो शायद आज का आधुनिक इंसान न जानता हो, उनमें से एक मैं भी नहीं जानती थी। कई प्रेरक प्रसंगों के द्वारा लोगों के जीवन में बदलाव के बारे में बताया गया है। हमें भी अपने वेदों और उपनिषदों को जानना चाहिये। क्योंकि यही हमारे जीवन का सार है।

मोको कहां ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास रे

अर्थात् भगवान ने कहा कि मुझे बाहरी वस्तुओं में कहां ढूंढते हो मैं तो तुम्हारे पास हूं तुम्हारे अंदर हूं।

– **सिम्मी पठानिया,** कंडवाल, हिप्र

मातृवन्दना का प्रत्येक अंक अनूठा व चित्ताकर्षक होता है। इसी कारण यह संग्रहणीय है। वैदिक धर्म संस्कृति, महापुरुषों, देशभक्तों के बारे में अद्वितीय जानकारी व पुरातन सांस्कृतिक संरक्षण, आयुर्वेदोपचार की जानकारी, कविताएं, सामान्य ज्ञान आदि इसे गागर में सागर बनाते हैं।

– **रवि कुमार सांख्यान**, बिलासपुर,

स्मरणीय दिवस (जून)

निर्जला एकादशी	1 जून
शिवाजी राज्याभिषेक दिवस	2 जून
संत कबीर जयंती	4 जून

राष्ट्र के नव जागरण का प्रतीक है शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक

जीवन में वही व्यक्ति स्वाभिमान से जी सकता है जिसे अपने होने का अर्थात् अस्तित्व का भान हो। अपने वजूद का एहसास उसे अपने जीवन में तब होता है जब वह अपने कदमों पर खड़ा होकर जीवन की कठिनाइयों का कड़े दम से मुकाबला करता है और उन पर विजय प्राप्त करता है। ईश्वरीय शक्ति जहां उसका साथ देती है, वहीं कोई न कोई वीर ऐतिहासिक पुरुष भी उसकी प्रेरणा का स्रोत होता है। धर्म, संस्कृति और सभ्यता के प्रति निष्ठा उसके आत्मविश्वास व दृढ़ निश्चय को और अधिक परिपक्व बनाती है। इस प्रकार हम मान सकते हैं कि हमारे अस्तित्व के मूल कारक तत्त्व हैं धर्म, राष्ट्र (जन्मभूमि), उसकी संस्कृति-सभ्यता और गौरवमय इतिहास। इसलिये इन कारक तत्त्वों के प्रति आदर-निष्ठा व प्रेम रखना हर देशवासी का कर्त्तव्य बन जाता है।

हिन्दू साम्राज्य का स्वर्णिम काल इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है। प्राचीन काल से अद्यपर्यन्त जब भी विषय परिस्थितियां उत्पन्न हुईं, जब-जब अधर्म बढ़ा और दुष्ट एवं राक्षसी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ तब-तब महान् वीर पराक्रमी महापुरुषों ने जन्म लिया और समृद्ध सम्राज्यों की स्थापना कर उन बुरी शक्तियों का विनाश किया। भारत के सुदीर्घ इतिहास में अनेक राज्याभिषेक हुए जो युग परिवर्तनकारी सिद्ध हुए। रावण का वध कर श्रीलंका पर विजय प्राप्ति के पश्चात् राम का राज्याभिषेक हुआ जिन्होंने आदर्श स्वरूप रामराज्य की स्थापना की। महाभारत युद्ध के बाद महाराजा युधिष्ठर का राज्याभिषेक धर्म राज्य की स्थापना का प्रतीक था। इसके अढ़ाई हजार वर्ष पश्चात् सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक सुसंगठित, समर्थ और शक्ति सम्पन्न भारत के नवोदय का प्रतीक बना। उसी प्रकार स्कन्द गुप्त, समुद्रगुप्त, पुष्पमित्र, विक्रमादित्य आदि अनेक सम्राट् हुए जिन्होंने एक छत्र राज्य करते हुए विदेशी ताकतों को भारत में घुसने नहीं दिया।

शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक भी हमारे इस प्राचीन राष्ट्र के प्रत्याक्रमण तथा नवजागरण का प्रतीक है। ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी विक्रमी संवत् 1731 (सन् 1674) भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जानी चाहिए क्योंकि इस दिन महाराज शिवाजी छत्रपति हुए और उनका राज्याभिषेक हुआ।

चन्द्रगुप्त को सम्राट् बनाने में जहां चाणक्य जैसे नीतिवान् एवं विद्वान गुरु का हाथ रहा वहीं मराठा सरदार शिवाजी को उद्भट वीर एवं परम यशस्वी राजा बनाने में उसकी मां जीजाबाई का सर्वाधिक योगदान रहा। महाराष्ट्र के एक वैरागी संत समर्थ गुरु रामदास का मार्गदर्शन और प्राम्भ काल से ही विषम परिस्थितियों में शिवाजी के लिये अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वफादार वीर पराक्रमी मित्र मराठों का सहयोग, हिन्दू-साम्राज्य की संस्थापना में उनका संबल बना।

भारत पर इस्लामी आक्रमण इस्लाम के उदय होते ही प्रारम्भ हो गए थे। भारतीय सीमा पर सिंध क्षेत्र को हस्तगत करने के पश्चात् यह इस्लामिक आंधी भारतीय सीमा में प्रवेश कर गई। दुर्भाग्य से संगठित न रहते हुए भी सीमांत राजाओं ने आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया किन्तु उन्हें रोकने में कामयाब नहीं हुए। वे देश को लूटते रहे और कई राज्यों पर शासन भी करते रहे। किन्तु भारतीय जन-मानस ने कभी उन्हें शासक रूप में स्वीकार नहीं किया। लगातार इनसे संघर्ष करते हुए भारत की अस्मिता और स्वाभिमान को बचाए रखा।

अंतत: बाबर के रूप में एक ऐसा हमलावर आया जिसने भारत पर इस्लामी परचम फहराने का खतरनाक सपना पाल रखा था। उसके इस सपने को साकार करने में उसके वंशजों ने कोई कसर नहीं छोड़ी और अकबर तथा औरंगजेब के समय देश का तीन चौथाई से अधिक भाग मुगलों के कब्जे में आ गया। नृशंस एवं अत्याचारी बादशाह औरंगजेब के शासनकाल में वीर शिवाजी का जीवन अद्भुत जीवट, साहस, संगठन कुशलता, शक्ति और युक्ति से शून्य में से निर्माण करने की एक अनुपम गाथा बन गया। केवल एक छोटी सी रियासत की जागीरदारी से आगे बढ़ बड़े-बड़े सेनापतियों एवं बादशाहों को धूल चटाकर एक विशाल हिन्दू साम्राज्य की स्थापना करना उनकी अतुलनीय वीरता का प्रमाण है। इन्होंने हिन्दुओं की बिखरी हुई शक्ति को जागृत एवं संगठित किया तथा विजयी बनकर भारतीय इतिहास को एक नए एवं गौरवशाली अध्याय से मंडित किया। इसलिये हिन्दू साम्राज्य पुनर्स्थापना का यह दिवस अत्यंत पावन है, प्रेरणादायक और चैतन्य पूर्ण है। यह दिन हमारी जीवन शक्ति का प्रतीक है। वर्तमान में निरंतर परिवर्तनशील परिस्थितियों में शिवाजी का जीवन-आदर्श हमारे लिये प्रेरणा का स्रोत है। एक बार फिर हमें हिन्दुत्व की रक्षा के लिये वीर शिवाजी के पवित्र संकल्प को दोहराने की आवश्यकता है। ❑

प्रेरक प्रसंग

मैं उस प्रभु का सेवक हूं जिसे अज्ञानी लोग 'मनुष्य' कहते हैं, यदि तुम्हें भगवान की सेवा करनी है, तो मनुष्य की सेवा करो।

– स्वामी विवेकानन्द

चिंतामुक्त जीवन

❑ परमहंस योगानन्द

चिंता चेतना की एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें आप किसी ऐसी समस्या के संदर्भ में असहायता एवं व्याकुलता की भावनाओं में जकड़े जाते हैं जिसे सुलझाने का कोई रास्ता आपको नजर नहीं आता। आप शायद अपने बच्चे के विषय में या अपने स्वास्थ्य के विषय में, या किसी ऋण के भुगतान के विषय में गम्भीरता से सोच रहे हैं। जब इसका शीघ्र कोई समाधान दृष्टि पथ में नहीं आता, तो आप उस परिस्थिति के विषय में चिंता करने लगते हैं। और इससे आपको क्या मिलता है?सरदर्द, अशांति, हृदय विकार। चूंकि आप स्वयं अपना या अपनी समस्याओं का विश्लेषण नहीं करते, इसलिये आप नहीं समझ पाते कि अपनी भावनाओं को या सामने खड़ी समस्या को कैसे नियंत्रित करें। चिंता करने में समय व्यर्थ गंवाने के बजाए समस्या के कारण को कैसे हटाया जाए, इस पर सकारात्मक चिंतन कीजिये। यदि आपको किसी समस्या से मुक्त होना है तो शांति से अपनी कठिनाई का विश्लेषण कीजिये, परिस्थिति के पक्षापक्ष का विचार कर शुरू से अंत तक एक-एक मुद्दे को लिखिये; फिर सारे मुद्दों को देखते हुए लक्ष्य को पाने के लिये क्या कदम उठाए जा सकते हैं, इसे सारासार विचार कर निश्चित कीजिये।

धन-संग्रह ठीक है यदि उस धनवान के मन में दूसरों की आवश्यकतानुसार सहायता करने की इच्छा हो। नि:स्वार्थ लोगों के पास पैसा रहना एक वरदान है, परन्तु स्वार्थी लोगों के पास उसका होना एक अभिशाप है। धन-स्वर्ण हमें उपयोग करने के लिये दिया गया है परन्तु वह ईश्वर के सिवा और किसी का नहीं है।

आपके पास यदि पैसा न हो तो आप परित्यक्त अनुभव करते हैं; सारा संसार जैसे पीछे हटता नजर आता है। परन्तु चिंता इसका कोई समाधान प्रस्तुत नहीं कर सकती। मन को चुस्त कीजिये और दृढ़ता से मन में यह दोहराइये : 'मैं अपना हिस्सा पाने के लिये दुनिया को हिला कर रख दूंगा। मुझे शांत रखने के लिये संसार को मेरी आवश्यकता की पूर्ति करनी ही होगी।' जिस किसी ने भी कुछ भी काम किया हो, चाहे वह घासपात उखाड़ना ही क्यों न हो, उसने इस पृथ्वी पर कुछ-न-कुछ उपयुक्त काम किया ही है तो फिर उसे इस पृथ्वी के उपहारों में अपना न्याय-सम्मत हिस्सा क्यों न मिले? किसी को भी भूखा रहने की या वंचित रह जाने की आवश्यकता नहीं।

पैसे का महत्त्व समाप्त हो जाएगा। यह मैं जो कह रहा हूं इसे याद रखिये। पैसा सत्ता की लालसा पैदा करता है; और प्राय: वह अपने स्वामी को दूसरों के दु:खों के प्रति हृदय-शून्य बना देता है। धन-संग्रह ठीक है यदि उस धनवान के मन में दूसरों की आवश्यकतानुसार सहायता करने की इच्छा हो। नि:स्वार्थ लोगों के पास पैसा रहना एक वरदान है, परन्तु स्वार्थी लोगों के पास उसका होना एक अभिशाप है। धन-स्वर्ण हमें उपयोग करने के लिये दिया गया है परन्तु वह ईश्वर के सिवा और किसी का नहीं है। ईश्वर की प्रत्येक संतान को ईश्वर के इस धान का उपयोग करने का अधिकार है। आपको अपनी विफलता को स्वीकार कर अपना अधिकार नहीं छोड़ देना चाहिये। ❑

आलसी मनुष्य से तो प्रयास करके कुछ प्राप्त करनेवाला भौतिकवादी मनुष्य बेहतर है; आलसी को मानव और भगवान दोनों ही त्याग देते हैं। उद्यमी लोगों ने समृद्धि प्राप्त की है, परन्तु पैसे को अपनी सफलता का मापदंड मत बनाइये। प्राय: पैसा नहीं, बल्कि उस पैसे को कमाने में जिस सृजनात्मक क्षमता का उपयोग किया गया, वह क्षमता संतोष प्रदान करती है। क्योंकि मैंने किसी का कभी कुछ बुरा नहीं किया। मैं जानता हूं कि यह सत्य है। 'मैं ने किसी का कभी कुछ बुरा नहीं किया' कह पाने का अर्थ है पृथ्वी पर सबसे सुखी व्यक्ति होना। ❑

–परमहंस योगानन्द

मीडिया और हिन्दी

❑ डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत

यह सही है कि मीडिया ने हिन्दी को जन-जन तक पहुंचाया है किन्तु यह हिन्दी की ही ताकत है कि वह विज्ञापनों, समाचार पत्रों, सिनेमा, दूरदर्शन, रेडियो, मोबाइल, एसएमएस तथा अनुवाद की भाष बन कर विश्व के सशक्त सम्प्रेषण माध्यमों की चहेती भाषा बन बैठी है। यूं भारत में हिन्दी व्यवहारत: राष्ट्रभाषा नहीं है और कुछ हठधर्मी राजनेताओं की कूट/कुटिल नीति के कारण यह अपना अधिकृत स्थान भी नहीं ले सकी है किन्तु फिर भी इसने सारे विरोधों को परास्त कर संचार माध्यमों पर अपना वर्चस्व स्थापित किया है। आज, दुनियां के बाजार और व्यापार के लिये सबसे अधिक वांछित भाषा हिन्दी है। यह उपभोक्ता संस्कृति की अनिवार्य भाषा बन कर उभरी है।

आज क्या कारण है कि विश्व की भाषाओं की राजमहिषी अंग्रेजी भी हिन्दी को अपने समकक्ष बिठाने लगी है। आज वह अपने व्यापार को बढ़ाने के लिये हिन्दी को अभिव्यक्ति का माध्यम बना रही है। आज केवल अंग्रेजी फिल्में ही नहीं अपितु स्टार न्यूज, डिस्कवरी चैनल, एनिमल प्लेनेट आदि अनेक दृश्य-श्रव्य माध्यम अपना व्यापार चमकाने के लिये हिन्दी में बतिया रहे हैं। अंग्रेजी मानसिकता की यह फितरत रही है कि वह अपने प्रभुत्व के लिये कुछ भी करने को उद्यत रहती है। वह साम, दाम, दण्ड, भेद (फूट/चालाकी) से किसी भी तरह अपना साध्य, साधना जानती है।

तमाम विदेशी आक्रमणकारी जातियों का लक्ष्य हिन्दुस्तान को सोने की चिड़िया जानकर उसे लूटना ही तो रहा है अगर गौर करें तो ईस्ट इंडिया कम्पनी का उद्देश्य एक व्यापारी कम्पनी के नाते ही नहीं शासकी सत्ता बन कर भी भारतवर्ष के सोने, चांदी, कच्चे माल, संसाधनों, यहां के ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों, पुस्तकालयों, यहां के शील सदाचार, संस्कार, यहां के धर्म, नीति, शालीनता एवं सत्यता का विमर्दन/अपहरण ही तो था। आज जब उसे लगता है कि विश्व के बाजार में चौथे नम्बर की मार्किट भारत, यदि उसके हाथ से निकल गया तो उसका माल अन्यत्र कहां बिकेगा, इसलिये वह हर उस अवसर की तलाश में है जिसके द्वारा वह अपने इच्छित को पा सकता है और इस इच्छित को पाने के लिये उसे एक अमोघ अस्त्र चाहिये और वह अस्त्र है हिन्दी। आज किसी भी तरह के व्यापार के लिये भारत, सबसे सुरक्षित एवं सम्भावनापूर्ण बाजार है। हिन्दी भारत में ऐसी भाषा है जिसे करीब-करीब भारत का प्रत्येक जन समझता है। अंग्रेजी ने इसीलिये बड़ी चालाकी और समझदारी से अपने व्यापार को बढ़ाकर अपनी सम्पन्नता को बनाए रखने के लिये दुनिया में सबसे बड़ी मण्डी भारत को ढूंढा और हिन्दी के माध्यम से इसे पटाने का काम किया।

आज वह हर भारतवासी जिसे अपनी राष्ट्रभाषा से प्रेम है, सम्प्रेषण माध्यमों में हिन्दी के बढ़ते प्रयोग प्रसार को देख-सुनकर प्रसन्न है। आज विश्व के बड़े-बड़े चैनल, हिन्दी कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। लगभग सर्वत्र हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। किन्तु इस सबके पीछे एक बड़ा षड्यंत्र भी चल रहा है जो हिन्दी के स्वरूप को बिगाड़ने में लगा है।

आज वह हर भारतवासी जिसे अपनी राष्ट्रभाषा से प्रेम है, सम्प्रेषण माध्यमों में हिन्दी के बढ़ते प्रयोग प्रसार को देख-सुनकर प्रसन्न है। आज विश्व के बड़े-बड़े चैनल, हिन्दी कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। लगभग सर्वत्र हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। किन्तु इस सबके पीछे एक बड़ा षड्यंत्र भी चल रहा है जो हिन्दी के स्वरूप को बिगाड़ने में लगा है।

आज हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों की बहुतायत, बहुत सारी इबारतों का रोमन में लेखन, छोटे-छोटे उत्पादों, पर परिचय पत्रों पर भी अंग्रेजी में लेखन, देशी दवाइयों, जड़ी बूटियों तक के नामों का अंग्रेजी में अंकन चिंता का कारण है। जितनी शुद्धता के साथ, किसी भी उच्चारण अथवा ध्वनि को देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है उतनी शुद्धता के साथ रोमन लिपि में नहीं। वह गेंदा को गेंडा और कला को सदा 'काला' ही लिखेगी। हिन्दी के शब्दों को रोमन में लिखना सोची समझी साजिश है?मैं समझता हूं कि ये तथाकथित व्यापारी, भाषा का व्यवहार तो रोक नहीं सकते किन्तु उसे उसकी मूल लिपि से भिन्न करके उसके स्वरूप से तो अलग कर ही सकते हैं। परिणामत: इन्होंने भारत की सर्वोत्तम भाषा को अपनी आधी-अधूरी लिपि में लिखकर उसे पाठभ्रष्ट, उच्चारभ्रष्ट और रूपभ्रष्ट करने की चाल रच डाली। भारत की देवनागरी लिपि विश्व की एकमात्र ऐसी लिपि है जिसमें दुनिया की किसी भी ध्वनि, उच्चार को अंकित किया जा सकता है। यह हजारों-हजारों वर्षों के मनन, चिंतन-लेखनाभ्यास से सधी/साधी हुई भाषा है जो अपने व्यवहार में पूर्ण और विकास में, तमाम सम्भावनाओं से भरी है।❑

छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक एक ऐतिहासिक घटना

शिवाजी के जन्म के समय इस देश की स्थिति बड़ी भयानक थी। समूचा वैभव पैरों तले रौंदा जा रहा था। पवित्र मूर्तियों के टुकड़े-टुकड़े किये जा रहे थे। प्रतिदिन हजारों गायें काटी जा रही थीं। नदियों में खून बहाया जा रहा था। शैतान की सत्ता का परिणाम अत्याचार की चरम सीमा पर था। सुल्तान की नौकरी भूषण बन गई थी। पीर और फकीरों की पूजा-अर्चना तथा उर्स-जुलूस की भरमार थी। गुलामी ने स्वत्व की भावना को इस तरह समाप्त कर दिया था कि हिन्दू भी सुल्तानराव, फकीरराव आदि नाम धारण करने में भूषण मानने लगे थे।

सारा समाज व्यथित था। किसी प्रतापी पुरुष के आगमन की उसे बड़ी उत्कंठा से प्रतीक्षा थी। ठीक इसी समय शक संवत् 1549 के फाल्गुन-मास के कृष्ण पक्षीय तृतीया की प्रात:काल शिवनेरी किले पर माता जीजाबाई ने शिवाजी को जन्म दिया।

पंडितों ने भविष्यवाणी की-'यह नवजात बालक दिग्विजयी होगा। इस श्रांत धरती माता को यह शांत करेगा। इससे भारत वर्ष की कीर्ति, यश, प्रताप एवं महिमा बढ़ेगी।'

रामायण-महाभारत की कथाओं ने शिवाजी के बाल मन पर गहरा असर दिया। जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, नए-नए प्रश्न उसे सताते रहे-'यह मंदिर क्यों और कैसे धराशायी हुआ? किसने ये घर जला कर राख कर दिये? हमारे लोग इतने निर्धन, दीन और लाचार कैसे बन गए?' समाज पर होने वाले अत्याचार देख सुनकर बाल शिवा ने अपना जीवन-ध्येय निश्चित कर लिया।

रामायण-महाभारत की कथाओं ने शिवाजी के बाल मन पर गहरा असर दिया। जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, नए-नए प्रश्न उसे सताते रहे-'यह मंदिर क्यों और कैसे धराशायी हुआ?किसने ये घर जला कर राख कर दिये?हमारे लोग इतने निर्धन, दीन और लाचार कैसे बन गए?' समाज पर होने वाले अत्याचार देख सुनकर बाल शिवा ने अपना जीवन-ध्येय निश्चित कर लिया।

बीजापुर के दरबार में सुल्तान के आगे शिवाजी का मस्तक झुका नहीं।

पूना और आसपास का क्षेत्र शिवाजी की गतिविधियों का केन्द्र बना। दादाजी कोंडदेव ने उसे प्रशासन का पाठ सिखाया। रोहिड़ेश्वर के देवालय में उसने हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की शपथ ली। मालव प्रदेश में उसने अपना मित्र परिवार इकट्ठा किया। उनकी शिवाजी पर अटूट श्रद्धा और भक्ति थी। शिवाजी उनसे कहते-'यहां स्वराज्य प्रस्थापित हो यह तो ईश्वरीय इच्छा है।'

जय-जय रघुवीर समर्थ

इसी महाराष्ट्र में एक विरागी संत का भ्रमण जारी था- 'जय जय रघुवीर समर्थ!'

16 वर्ष के शिवाजी ने प्रण किया-'इस पवित्र मातृभूमि को सुल्तानशाही के पंजे से मुक्त कर स्वराज्य की स्थापना करके रहूंगा।'

स्वराज्य स्थापना के कार्य का शुभारम्भ हुआ तोरण का किला लेकर। फिर राजगढ़, कोंडाणा आदि एक के बाद एक अनेक किले शिवाजी ने अपने अधिकार में कर लिये।

शिवाजी इधर स्वराज्य स्थापना में व्यस्त थे कि उधर बीजापुर में श्रावण पूर्णिमा की एक रात को मुस्तफाखान और बाजी घोरपड़े ने दगाबाजी कर शाहजी राजा को कैद कर लिया। शिवाजी ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया। मुगल बादशाह से मिल जाने का डर दिखाकर उसने अपने पिता को शत्रु की कैद से मुक्त कराया।

जावळी का चंद्रराव मोरे बगावत पर उतर आया। कहने लगा-'तुम्हें किसने राज्य दिया? तुम कैसे राजा बने?' शिवाजी ने उसे कड़ा उत्तर भेजा-'सीधी तरल जावळी को स्वाधीन कर बंधे हाथ हमारे सामने उपस्थित हो जाओ, अन्यथा गाड़ दिये जाओगे।' वैसा ही हुआ। जावळी पर कब्जा कर लिया गया। चंद्रराव मोरे का खात्मा कर दिया गया और

शिवाजी की धाक सर्वदूर फैल गई।

रायगढ़ पर भगवा झंडा फहरा कर अपने बहादुर साथियों को अलग-अलग मोर्चों पर रवाना कर दिया। 40 किले शिवाजी के अधीन हो गए।

दुधारी तलवार

गोवा में शिवाजी को एक असामान्य दुधारी तलवार मिली। यही उनकी भवानी तलवार थी।

शिवाजी की गतिविधियों को समाप्त करने का बीड़ा उठाकर अफजलखान बीजापुर से निकल पड़ा। किन्तु कूटनीति और युद्धनीति में निपुण शिवाजी ने उसे जावळी के जंगल से प्रतापगढ़ तक खींच लिया। मार्गशीर्ष मास की शुद्ध सप्तमी के दिन खान से भेंट कर उसी क्षण उसे मौत के घाट उतारा और खान की बड़ी सेना का सफाया कर दिया।

दिल्ली से आक्रमण

अब विरोध में खड़ा हुआ साक्षात् दिल्ली का बादशाह। शाइस्ताखान ने पूना के लाल महल में डेरा डाला। शिवाजी ने उसकी उंगलियां छांट दीं। खान सीधे दिल्ली भाग गया।

शिवाजी महाराज का अपार वैभव देखकर देखने वाले की आंखें चकाचौंध हो गई। उनके मन को संतोष हुआ। बाल शिवाजी का स्वप्न साकार हुआ। माता जीजाबाई धन्य हुईं। जय ध्वनि दशों दिशाओं में गूंज उठी। किन्तु यह समारोह केवल वैभव का प्रदर्शन मात्र नहीं था। पराभूत मनोवृति का शिकार बनी हिन्दू जाति को संजीवनी देने वाली यह घटना थी।

स्वराज्य-स्थापना में जिन्होंने गद्दारी की उन्हें कड़ी सजा दी गई। खंडोजी खोपड़े का एक हाथ और एक पैर काट दिया गया। बाजी घोरपड़े का शिवाजी ने अपनी भवानी तलवार से शिरच्छेद कर दिया।

इब्राहीम खान नाम के एक सरदार ने कुड़ाळ की लड़ाई में बड़ी वीरता दिखाई। शिवाजी ने उसकी मुक्त कंठ से सराहना की।

जहाजी बेड़ों का निर्माण

शिवाजी ने जहाजी बेड़ा सुदृढ़ बनाया। जलदुर्ग बांधे। बसनुर में तोपों के कारखाने लगाए।

बलिदानी वीर सहयोगी

स्वराज्य का विस्तार हो रहा था। इस कार्य में शिवाजी के कतिपय वीर काम आए। तानाजी, बाजीप्रभु, मुरारबाजी जैसे कई साथी लड़ते-लड़ते अमर हो गए।

राजा जयसिंह को पत्र

'शिवाजी की बगावत को समाप्त करने' के इरादे से मिर्जा राजा जयसिंह स्वयं दक्षिण में आए। स्वराज्य में आतंक मचा दिया। शिवाजी ने चाल चली। मिर्जा राजा जयसिंह को एक पत्र लिखा-'शेर आपस में लड़ कर घायल हों और सियार जंगल के धनी बनें यह औरंगजेब की इच्छा है। किन्तु यह समय आपस में लड़ने का नहीं है। इस समय तो हिन्दू, हिन्दुस्थान और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये हम-आप मिलकर जुट जाएं। मारवाड़ के राजा जयसिंह से मेल-मिलाप कर आप चारों ओर से हमला बोल दीजिये। हम दक्षिण में इस्लाम का नामों निशान मिटा देंगे। इस विषय में हम-आप से परामर्श करना चाहते हैं।' भेंट हुई और आगरा जाने का प्रस्ताव हुआ।

शिवाजी महाराज आगरा क्यों गए होंगे?शाइस्ताखान, अफजलखान की तरह औरंगजेब को भी प्रत्यक्ष भेंट में ठिकाने लगाकर समूचे देश को मुक्त करना और सम्पूर्ण भारतवर्ष में हिन्दवी स्वराज्य प्रस्थापित करना, इसके अतिरिक्त अन्य कौन-सा विचार मस्तिष्क में रखकर उन्होंने पूना से लेकर आगरा तक स्थान-स्थान पर अपने निष्ठावान और विश्वासपात्र लोग तैनात कर दिये।

औरंगजेब से संघर्ष

किन्तु शिवाजी की यह योजना सफल नहीं हो पाई और आगरा की कैद से बड़ी कुशलता से भाग कर बैरागी के वेष में वे रायगढ़ लौटे। औरंगजेब क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने मिर्जा राजा से बदला लिया। नेताजी पालकर को कैद कर उसे मुसलमान बना दिया।

शिवाजी ने बड़ी दूरदर्शिता से नेताजी पालकर को सम्मान के साथ हिन्दू धर्म में ले लिया। एक नेताजी ही नहीं ऐसे कइयों को शिवाजी ने स्वधर्म में वापिस ले लिया।

आगरा लौटने के उपरांत स्वराज्य का बहुत सारा प्रदेश शिवाजी ने फिर अपने अधिकार में कर लिया। स्वराज्य में सुराज्य की स्थापना की। प्रत्येक क्षेत्र में मौलिक क्रांति की। रामराज्य की स्मृतियां जगीं। यह क्रांति पूर्णत: हिन्दू समाज जीवन तथा राष्ट्र जीवन के मूल्यों पर आधारित थी।

शिवाजी महाराज मानवता के सशस्त्र संरक्षक थे। सभी धर्म तथा सदाचार को उनका संरक्षण प्राप्त था। परन्तु हिन्दुत्व पर आक्रमण उन्होंने कभी सहन नहीं किया। दक्षिण में कुछ

मंदिर गिराकर वहां मस्जिदें बनाई गई थीं। शिवाजी ने उन मस्जिदों को हटाकर वहां पुन: मंदिरों की प्रतिष्ठापना की। अधिकारियों को उन्होंने कड़े अनुशासन में रखा। गद्दारी, घूसखोरी, रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी आदि पर उन्होंने कड़ा नियंत्रण रखा। स्वराज्य में कोई भूखा, अनाश्रित अथवा बेघर न रहने पाए इस पर उनका सूक्ष्म ध्यान था। शिवाजी के शासन का आधार थी गुणवत्ता। गुणीजनों का वे आदर करते थे। कल्याण के सूबेदार की रूपवती पुत्रवधू को लूट में पाने पर भी शिवाजी ने उसे वस्त्रालंकारों से विभूषित करते हुए बड़े सम्मान के साथ वापिस उसके घर पहुंचा दिया। शिवाजी महाराज हिन्दुओं के इस धर्मराज्य के अर्थात् हिन्दवी स्वराज्य के केवल उपभोग शून्य स्वामी थे।

मंदिरों की ध्वंस व्यथा

उत्तर भारत में होने वाले औरंगजेबी अत्याचारों की व्यथा शिवाजी के मन को निरंतर सालती थी। मूर्तियां तोड़ी जा रही थीं। लोग बलपूर्वक धर्मभ्रष्ट किये जा रहे थे। क्षेत्रराज काशी पर आक्रमण हुआ। 'बुतशिकन शमशेर जंग' की सेना श्री विश्वेश्वर मंदिर में घुस गई। बिंदुमाधव का मंदिर तोड़कर गिरा दिया गया। मथुरा का केशवदेव मंदिर ध्वस्त कर दिया गया। सौराष्ट्र में सोमनाथ पुन: एक बार भग्न हुआ।

छत्रसाल से भेंट

छत्रसाल शिवाजी से मिलने आए। उन्होंने शिवाजी को हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों की कहानी सुनाई। शिवाजी ने उनसे कहा–'आप तो क्षत्रियों के सरताज हैं! आप बुंदेलखण्ड में जाकर अपनी मातृभूमि को मुक्त कीजिये। स्वदेश में स्वराज्य प्रस्थापित कीजिये। विजय आपकी होगी।'

अतुलनीय पराक्रम, असीम त्याग, जाज्वल्य निष्ठा, विस्मयकारक कारनामे, अनाकलनीय साहस, उत्तुंग महत्त्वाकांक्षा– इन गुणों के बल पर शिवाजी तथा उनके साथियों ने इस भूमंडल पर 30 वर्ष में असाधारण क्रांति कर दिखाई।

शिवाजी महाराज मानवता के सशस्त्र संरक्षक थे। सभी धर्म तथा सदाचार को उनका संरक्षण प्राप्त था। परन्तु हिन्दुत्व पर आक्रमण उन्होंने कभी सहन नहीं किया। दक्षिण में कुछ मंदिर गिराकर वहां मस्जिदें बनाई गई थीं। शिवाजी ने उन मस्जिदों को हटाकर वहां पुन: मंदिरों की प्रतिष्ठापना की। अधिकारियों को उन्होंने कड़े अनुशासन में रखा। गद्दारी, घूसखोरी, रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी आदि पर उन्होंने कड़ा नियंत्रण रखा। स्वराज्य में कोई भूखा, अनाश्रित अथवा बेघर न रहने पाए इस पर उनका सूक्ष्म ध्यान था।

शिवाजी का कीर्ति-यश दशों दिशाओं में फैला। हिन्दू प्रजा में श्रद्धा थी कि राजा शिवाजी धर्म स्थापना के लिये स्वराज्य प्रस्थापित कर रहे हैं। वे प्राचीन राजाओं की मालिका में शोभायमान पुण्यलोक पुरुष हैं।

शिवाजी का राज्याभिषेक

काशी के वेदपंडित गंगाभट्ट शिवाजी से मिलने आए। उन्होंने देखा कि शिवाजी का राज्याभिषेक हुए बिना उनकी महत्ता को विश्व नहीं जान पाएगा। उन्होंने शिवाजी से कहा–'धर्म की आज्ञा है कि सिंहासन पर बैठें।'

सिंहासन के लिये रायगढ़ का स्थान निश्चित हुआ। राजसभा सिद्ध हुई। 32 मन सोने का सिंहासन तैयार किया गया। उस पर अमूल्य रत्न जड़े गए। मुहूर्त निश्चित हुआ–शक संवत् 1556 ज्येष्ठ शुद्ध त्रयोदशी शनिवार के दिन सूर्योदय के पूर्व 3 घटिका उष:काल। भारत वर्ष की सप्त गंगाओं का जल, समस्त सागर तथा पवित्र क्षेत्रों का तीर्थोदक लाकर शिवाजी का

समर्थ रामदास की दृष्टि में शिवाजी

समर्थ रामदास परम राम भक्त थे। देश भर में उन्होंने भ्रमण किया था। देश की दुर्व्यवस्था देखकर ये बहुत व्यथित थे। ऐसे संत सत्पुरुष ने शिवाजी के सम्बंधा में जो लिखा है वह चिरस्मरणीय है। समर्थ रामदास लिखते हैं–

महामेरु तुम निश्चय के हो।
दु:खी जनों के आश्रय तुम हो।
अखण्ड स्थिति के दृढ़ व्रतधारी।
इस युग के तुम राजर्षि हो।
नित परहित रत क्षण क्षण दिन दिन।
और न दूजा कोई चिंतन।
कौन गिन सका तेरे सद्गुण।
अनुपम अतुल तुम्हारा जीवन।।
तुम हो नरपति हयपति गजपति।
तुम हो गढ़पति भूपति जलपति।
तुम प्रतीत होते हो सुरपति
पास तुम्हारे ईश्वर शक्ति।।

इन सब उक्तियों से हम कल्पना कर सकते हैं कि शिवाजी महाराज के असामान्य कर्तृत्व ने सम्पूर्ण देश को कितना प्रभावित और मोहित किया था। ❑

अभिषेक किया गया। शिवाजी महाराज सिंहासन पर विराजमान हुए। कोटि-कोटि कंठों से एक स्वर से जयध्वनि गूंजी–'छत्रपति शिवाजी महाराज की जय।'

छत्रपति की मुहर सार्थक हुई–

'प्रतिपच्चंद्ररेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता।

शाहसूनो:शिवस्यैष: मुद्रा भद्राय राजते।।'

अष्टप्रधान मंडल नियुक्त हुआ। संस्कृत नामावली का प्रयोग आरम्भ हुआ। राज्य व्यवहार कोष तैयार हुआ। सही अर्थ में स्वराज्य अवतीर्ण हुआ।

शिवाजी महाराज का अपार वैभव देखकर देखने वाले की आंखें चकाचौंध हो गई। उनके मन को संतोष हुआ। बाल शिवाजी का स्वप्न साकार हुआ। माता जीजाबाई धन्य हुईं। जय ध्वनि दशों दिशाओं में गूंज उठी। किन्तु यह समारोह केवल वैभव का प्रदर्शन मात्र नहीं था। पराभूत मनोवृति का शिकार बनी हिन्दू जाति को संजीवनी देने वाली यह घटना थी।

हिन्दू पराक्रम परम्परा

हिन्दू जाति केवल परतंत्रता में जीने मरने के लिए पैदा नहीं हुई। प्रबल आक्रमणकारी को नेस्तनाबूद (ध्वस्त) करके अपना सिंहासन निर्माण करने का सामर्थ्य उसमें है, इस बात को शिवाजी ने सिद्ध कर दिया तथा सारे विश्व को इस बात का प्रमाण दिया। यह स्मृति आज भी प्रेरणादायी है।

राज्याभिषेक समारोह को आज 338 वर्ष (6 जून, 1674 ई.) बीत गए। बीच का कुछ कालदासता में बीता। किन्तु अब समय बदल गया है। परिस्थिति भी बदली है। अब न कोई राजा रह गया है, न ही रहा उस का कोई सिंहासन! प्रजा अब सार्वभौम है। जनतंत्र का उदय हुआ है।

हिन्दू राष्ट्र ही ध्येय हमारा

किन्तु गत हजार-बारह सौ साल से चलता आ रहा आक्रमण हटाने में हम अभी तक पूर्ण सफल नहीं हुए हैं। उसे समाप्त कर अपना धर्म, अपनी संस्कृति और अपने समाज पर आक्रमण करने का साहस भी कोई न कर पाए इतना बलशाली और सुसंघटित समाज बनाना ही हमारा ध्येय है। यह हम सब का कार्य है हिन्दू साम्राज्य उत्सव के अवसर पर हम सबको यह प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हिन्दू समाज को सुसंघटित और सामर्थ्य सम्पन्न बनाकर इस अखंडित भारत भूमि पर समस्त विश्व के हिन्दू मात्र का आधार स्वरूप हिन्दू राष्ट्र निर्माण करेंगे। यही छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन का तथा राज्याभिषेक का शाश्वत संदेश है। ❑

हजार-बारह सौ साल से चलता आ रहा आक्रमण हटाने में हम अभी तक पूर्ण सफल नहीं हुए हैं। उसे समाप्त कर अपना धर्म, अपनी संस्कृति और अपने समाज पर आक्रमण करने का साहस भी कोई न कर पाए इतना बलशाली और सुसंघटित समाज बनाना ही हमारा ध्येय है।

भारत की सीमाएं चारों तरफ से असुरक्षित

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ. भा. कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार ने कहा कि आज भारत की सीमाओं को सबसे बड़ा खतरा चीन से है। हिमालय की सीमा रेखा पर चीन ने दो लाख सैनिक तैनात कर दिये हैं। कई जगह हेलीपैडों का निर्माण किया गया है। अगर चीन ने किसी तरह की पहल की तो सबसे ज्यादा खतरा हिमालयी राज्यों को होगा। उन्होंने कहा कि चीन को तुरंत प्रभाव से कैलाश मानसरोवर से नियंत्रण खाली कर देना चाहिये। इंद्रेश धर्मशाला में हिमालय परिवार द्वारा हिमालय पर बढ़ते खतरे विषय पर आयोजित मंथन कार्यक्रम में सम्बोधित कर रहे थे।

इस मौके पर तिब्बतियों के सत्रहवें करमापा उग्येन त्रिनले दोरजे मुख्य अतिथि थे। कार्यकाल के बाद प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुए इंद्रेश ने कहा कि भारत आंतरिक तौर पर माओवाद की आग में जल रहा है और उत्तर पूर्व में अलगाववाद देश के लिये चुनौती बन गया है। सीमाओं को सुरक्षित करने के लिये हिमाचल में रेलवे विस्तार की आवश्यकता है।

हिमालय परिवार केन्द्र से यह मुद्दा उठाएगा। उन्होंने कहा कि धर्मशाला स्थित सत्रहवें करमापा को दलाईलामा का आशीर्वाद प्राप्त है। उम्मीद है कि वही गद्दी के असली वारिस होने के नाते सिक्किम की रूमटेक मोनेस्ट्री में पदासीन होंगे। इस मौके पर बौद्ध धर्म, विश्व शांति और हिमालय पर बढ़ते खतरे पर चिंतन किया गया। ❑

भारतीय मीडिया में पाश्चात्य दृष्टिकोण चिंताजनक : धूमल

सूचना संचार में देवर्षि नारद के आदर्शों को अपनाना जरूरी

विश्व संवाद केंद्र शिमला द्वारा आदि पत्रकार देवर्षि नारद जयंती के उपलक्ष्य पर आयोजित पत्रकार सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि पत्रकारिता में विस्तार के चलते भारतीय दृष्टि का लोप होना व पाश्चात्य विचारों का प्रभाव उत्पन्न होना चिंता का विषय है जिसके लिये पत्रकार जगत से जुड़े लोगों को चिंतन करना होगा। शिमला में आयोजित इस समारोह में उन्होंने कहा कि पत्रकारिता एक बड़े उद्देश्य की प्राप्ति का माध्यम था जिसमें ध्येय निहित होता था किन्तु आजकल की पत्रकारिता में व्यवसायिकता निहित है । उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में मीडिया क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण की आवश्यकता है। व्यवसायीकरण के चलते क्षेत्र में कुछ कमियां आई हैं, जिन्हें भारतीय दृष्टिकोण अपनाकर दूर किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि सूचना का संचार करने के लिए देवर्षि नारद को आदर्श के रूप में अपनाया जाता है तो अवश्य ही समाज का कल्याण होगा। नारद जी द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य लोक-कल्याण के लिये था। वे हर समय समाज के कल्याण के विचार में ही मग्न रहते थे। नारद सदैव सृष्टि के कल्याण का ही चिंतन करते थे। यह उनके कार्यों से भी स्पष्ट है। अपनी खबरों से जहां कहीं भी नारद ने संघर्ष उत्पन्न किया उसकी अंतिम परिणति समाज के कल्याण में ही हुई। उन्होंने विश्व संवाद केंद्र की देश भर में स्थापित इकाइयों द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। विश्व संवाद केंद्र द्वारा सम्पादक के नाम पत्र लेखकों को सम्मानित करने के फैसले की भी उन्होंने सराहा । उन्होंने कहा कि आज मानव का स्वभाव बन गया है कि वह अपनी असफलता का कारण किसी दूसरे में ढूंढ रहा है। यही स्थिति लोकतंत्र के चारों स्तम्भों में भी देखने को मिल रही है। इसे बदलना होगा, हमें आत्मचिंतन करना होगा। उन्होंने कहा कि अज्ञानता के चलते वर्तमान में देवर्षि नारद की छवि एक आग लगाने वाली तथा चुगलखोरी करने वाली दर्शायी जाती है किन्तु ऐसा बिलकुल भी नहीं है। आज भी समाज में नारद जी को देवर्षि का दर्जा प्राप्त है। उनके वचनों पर लोगों को विश्वास है। देवर्षि नारद ने यह विश्वसनीयता इस कारण प्राप्त की है क्योंकि वह सूचनाओं की तह तक जाने के लिए तथा वस्तुस्थिति की पूरी जानकारी पाने के लिए स्वयं मौके पर पहुंचते थे, जिसे आज के मीडिया जगत में खोजी पत्रकारिता के नाम से जाना जाता है। उन्होंने माना कि वर्तमान में बाजारवाद के कारण पत्रकार अपने विचार को स्वतंत्रतापूर्वक नहीं रख पा रहा है। मीडिया पर बड़े-बड़े बिजनेस हाऊसों का प्रभाव पड़ रहा है। वह स्वयं के फायदे के लिए समाचारों को अलग रूप में प्रस्तुत करते हैं जो समाज में मीडिया की एक संवाद वाली भूमिका को समाप्त कर रहा है। उन्होंने देवर्षि नारद के नाम को पत्रकार सम्मान के साथ जोड़े जाने को एक सकारात्मक दिशा की ओर कदम बताया।

आज भी समाज में नारद जी को देवर्षि का दर्जा प्राप्त है। उनके वचनों पर लोगों को विश्वास है। देवर्षि नारद ने यह विश्वसनीयता इस कारण प्राप्त की है क्योंकि वह सूचनाओं की तह तक जाने के लिए तथा वस्तुस्थिति की पूरी जानकारी पाने के लिए स्वयं मौके पर पहुंचते थे, जिसे आज के मीडिया जगत में खोजी पत्रकारिता के नाम से जाना जाता है।

इस अवसर पर समारोह में बतौर मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र प्रचार प्रमुख नरेंद्र कुमार ने कहा कि जिस विश्वसनीयता को देवर्षि नारद ने अपनाकर सूचनाओं का संचार तीनों लोक में किया, उसी तर्ज पर आज की मीडिया को अपनी विश्वसनीयता कायम करनी होगी। उन्होंने बताया कि शिमला में विश्व संवाद केंद्र की ओर से यह तीसरा पत्रकार सम्मान समारोह आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रारंभ में जब नारद को पत्रकारिता जगत का

आदर्श मान कर यह सम्मान समारोह आयोजित हुए तो कई प्रकार के विषय सामने आए। वर्तमान में नारद जी के चरित्र से अनजान लोगों ने इस हास्यप्रद माना किन्तु एक नए विचार की शुरूआत मान कर इसकी सराहना भी की। धीरे-धीरे लोगों को देवर्षि नारद के सकारात्मक और सर्वलोक संचारक के गुण दिखने प्रारम्भ हुए हैं।

वर्तमान में नारद जी की भूमिका मे मीडिया जगत भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। लोकतंत्र में मीडिया को चौथे स्तम्भ का गौरव प्राप्त हुआ है। जहां लोकतंत्र के तीन स्तम्भों पर अंकुश लगाने के लिए कई प्रकार के प्रावधान है वहीं चौथे स्तम्भ के विषय में ऐसा नहीं है। बाजारीकरण के चलते मीडिया के पाठकों, श्रोताओं, और दर्शकों को ग्राहक बनाया जा रहा है। जिसके कारण मीडिया की निष्पक्षता में काफी कमी आई है। वैश्वीकरण के कारण पाश्चात्य विचार मीडिया पर छाए हुए हैं, समाचार के प्रस्तुतिकरण के फलस्वरूप समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस पर कोई विचार नहीं हो रहा है। जबकि देवर्षि नारद ने ऐसी बातों को सूचना प्रवाह के लिए निषेध माना था। इसलिए आज मीडिया में भारतीय दृष्टिकोण से पत्रकारिता का चिंतन तथा सही सूचना का समाज तक पहुंचना महत्वपूर्ण और विचारणीय विषय बन गया है।

मीडिया में बाजारवाद आने के कारण समाज के समक्ष प्रेरणादायक समाचार नहीं पहुंच पा रहे हैं। समाज जागरण के लिए टूजी स्पेक्ट्रम, कॉमनवैल्थ जैसे घोटालों को उजागर कर जहां मीडिया ने लोगों की वाहवाही लूटी है और पथप्रदर्शक की भूमिका निभाई है, वहीं बिना तथ्यों के प्रस्तुत की गई सूचना ने मीडिया की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह भी लगाए है। इसलिए आवश्यकता है कि देवर्षि नारद रूपी मीडिया को खलनायक न बना कर नायक की भूमिका में लाया जाए।

मीडिया में बाजारवाद आने के कारण समाज के समक्ष प्रेरणादायक समाचार नहीं पहुंच पा रहे हैं। समाज जागरण के लिए टूजी स्पेक्ट्रम, कॉमनवैल्थ जैसे घोटालों को उजागर कर जहां मीडिया ने लोगों की वाहवाही लूटी है और पथप्रदर्शक की भूमिका निभाई है, वहीं बिना तथ्यों के प्रस्तुत की गई सूचना ने मीडिया की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह भी लगाए है। इसलिए आवश्यकता है कि देवर्षि नारद रूपी मीडिया को खलनायक न बना कर नायक की भूमिका में लाया जाए।

इस अवसर पर विश्व संवाद केंद्र शिमला के प्रमुख दलेल सिंह ठाकुर ने कार्यक्रम की रूपरेखा रखी तथा मीडिया में देवर्षि नारद के आदर्शों को लाने के महत्व को उजागर किया। उन्होंने बताया कि पत्रकार समाज में एक प्रहरी की भूमिका निभाने के साथ-साथ चेतना जगाने और संस्कृति संरक्षण में अहम भूमिका निभाता है। उन्होनें कहा कि अपनी निष्पक्ष राय देना वाला पत्रकार आम जनता की आवाज है और वह जनता के भावों को व्यक्त करता है। ऐसे पत्रकार जो समाज को सही दिशा प्रदान करें और राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए समाचार लिखे और एक सही तस्वीर समाज के समक्ष रखें, उन्हें विश्व संवाद केन्द्र शिमला ने हर वर्ष नारद जयन्ती के अवसर पर देवर्षि नारद पुरस्कार देने का निर्णय लिया है।

कार्यक्रम में पीटीआई के वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश चंद लोहमी, दिव्य हिमाचल की महिला पत्रकार श्रीमती पूनम भारद्वाज, अमर उजाला के हमीरपुर ब्यूरो चीफ युवा पत्रकार निकुंज सूद, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकार राकेश शर्मा, तथा द ट्रिब्यून के छाया पत्रकार अमित कंवर को मुख्यमंत्री द्वारा प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया, साथ ही हमीरपुर के पुनीत कुमार, बिलासपुर के रवि कुमार सांख्यान और कुल्लू के जोगिन्द्र शर्मा को सम्पादक के नाम पत्र लेखन के लिए प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

अंत में मातृवंदना संस्थान के अध्यक्ष डॉ. दयानंद शर्मा ने अतिथियों का धन्यवाद किया और सरस्वती विद्या मंदिर कमलानगर की छात्राओं ने वंदेमातरम् प्रस्तुत किया। ❑

हिमगिरि कल्याण आश्रम द्वारा कटगांव (किन्नौर) मे गत 12-13 मई को चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 700 रोगियों का स्वास्थ्य निरीक्षण किया गया।

किसी भी कीमत पर हो सच्चाई उजागर : बनवीर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देवर्षि नारद की जयंती बद्दी में पर एक पत्रकार गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें मुख्य वक्ता संघ के प्रांत प्रचारक बनवीर सिंह थे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्योग नगरी बद्दी के एसपी श्री गुरदेव शर्मा ने की तथा मुख्य अतिथि तहसीलदार विकास शुक्ला थे। गोष्ठी में बद्दी-बरोटीवाला व नालागढ़ के पत्रकारों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्राचीन समय के संदेशवाहक माने जाने वाले देवर्षि नारद के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। इस गोष्ठी का मुख्य विषय वर्तमान में मीडिया की भूमिका था।

नारद जयंती पर पत्रकार गोष्ठी

नारद जयंती पर आयोजित पत्रकार गोष्ठी में मुख्य अतिथि के साथ बीबीएन क्षेत्र के पत्रकार

मुख्य वक्ता संघ के प्रांत प्रचारक बनवीर सिंह ने कहा कि आज के मीडिया को अपनी भूमिका समझनी होगी क्योंकि देश व राष्ट्र के विकास में उनका भारी योगदान है। उन्होंने कहा कि हर कीमत पर सच्चाई उजागर होनी चाहिए चाहे हमारे रास्ते में कितनी भी बाधाएं आए। उन्होंने कहा कि आज हमारे देश की समस्त नीतियां व कार्यक्रम पश्चिमी स यता से प्रभावित हैं और हिंदू रीति रिवाजों व परंपराओं को नकारा जा रहा है जिसका भविष्य में आने वाली पीढी को खामियाजा भुगतना पड़ेगा। उन्होंने एक शे'र- 'सच लिखने वाले खास खास हैं, वरना सब कलम तो सत्ता के पास हैं', के साथ अपना संबोधन समाप्त किया।

श्री गुरदेव शर्मा ने आधुनिक मीडिया व चुनौतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला और मीडिया को समाज की आंखें करार दिया। तहसीलदार बद्दी श्री विकास शुक्ला ने कहा कि व्यावसायिकता के इस दौर में भी प्रिंट मीडिया की विश्वसनीयता आज भी इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया के मुकाबले बरकरार है।

विभिन्न समाचार पत्रों में काम कर चुके सेवानिवृत संपादक ज्ञानेंद्र भारद्वाज ने देवर्षि नारद की उस समय की पत्रकारिता व तीनों लोकों में उनकी संदेशवाहक भूमिका पर पत्रकारों को अवगत कराया। वरिष्ठ पत्रकार बलबीर ठाकुर, संतोष चौहान व पोलाराम चौधरी ने पत्रकारिता के गिरते स्तर पर चिंता जाहिर की और कहा कि पत्रकारिता के सम्मान को बरकरार रखने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। योजना बोर्ड के सदस्य डा. श्रीकांत शर्मा ने कहा कि समाचारों में पत्रकार का चरित्र भी झलकता है इसलिए वह स्वयं भी समाज के लिए एक मिसाल पेश करें।

उधर नूरपुर के ज्वाली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचार विभाग के प्रयास से नारद जयंती कार्यक्रम आयोजित किया गया। नूरपुर जिला प्रचार प्रमुख संजीव बहल से मिली जानकारी के अनुसार कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक बनवीर जी तथा प्रांत प्रमुख शिव कुमार जी उपस्थित रहे। बनवीर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि देवर्षि नारद विश्व के सर्वश्रेष्ठ पत्रकार व भगवान के प्रिय भक्त थे। शिव कुमार जी ने कहा कि देवर्षि नारद लोकहित के लिये सर्वत्र लोगों में भ्रमण कर प्रचार-प्रसार करते थे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पत्रकारों ने हिस्सा लिया। ❑

With best compliments from

MACLEODS

Macleods Pharmaceuticals Ltd.
Vill.- Theda, Khasuni lodhi Majra Rd,
Tehsil- Nalagarh, Distt. Solan,
Himachal Pradesh-174101
Tel No. 01795-661400

शोध बिना उपेक्षित गुणकारी काफल

इन दिनों प्रदेश के वाईल्ड फलों में से एक महत्वपूर्ण तथा स्वादिष्ट माने जाने वाले फल काफल की बहार आई हुई है। मंडी में भी काफल पहुंच गया है। मगर इस बार काफल के दाम लगभग 150 रुपये प्रति किलो होने के कारण यह अभी आम आदमी की पहुंच से बाहर ही है, जबकि इसके रसीले स्वाद के रसिक लोग इसे महंगा दाम होने के बावजूद खरीद रहे हैं। ऊंचे दाम होने के चलते 15 रुपये में 100 ग्राम खरीद करने वाले ग्राहकों की संख्या ज्यादा है। काफल को संस्कृत कटफल तथा लैटिन में मायरकानगी नाम से जाना जाता है। आयुर्वेद की किताबों में कटफल नस्य का जिक्र है, जो ईएनटी के इलाज में दवाई के रूप में प्रयोग की जाती रही है। जुकाम, गले, बुखार, अस्थमा, कफ, सिरदर्द की औषधि के रूप में काफल का प्रयोग अचूक औषधि है। इसे पाचन तंत्र सुधारने के लिये भी आयुर्वेद में गुणकारी फल बताया गया है।

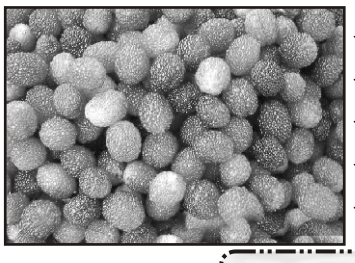

प्रदेश में मध्य ऊंचाई क्षेत्र के वनों में काफल के पेड़ बहुतायत में पाए जाने के बावजूद आज तक इस फल को कोई विशेष पहचान नहीं मिल पाई है, हालांकि यह फल मंडी तथा प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की आय का साधन भी है। मंडी में कटेरु, जयदेवी, शिबाबदार, चौहार घाटी, उतरशाल, कोटली, नैणा देवी, गुम्मा, कटौला, बल्ह-टिकर, पौड़ाकोठी आदि क्षेत्रों के जंगलों में पाए जाने वाले महत्त्वपूर्ण फल को आज तक प्रदेश के बाग-बगीचों में स्थान न मिलना इस दिशा में सरकार की कमी उजागर करता है।

जोगिन्द्रनगर हर्बल गार्डन के प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ. सुभाष राणा का कहना है कि कटफल नस्य का जिक्र आयुर्वेद में है, जो ईएनटी सम्बंधित रोगों के निदान के लिये रामबाण औषधि बताई गई है, इसके अलावा अन्य शारीरिक रोगों पर इसका प्रयोग बताया गया है। इस संदर्भ में मंडी के जिला बागवानी अधिकारी का कहना है कि अभी तक यह फल प्रदेश में जंगली फल के रूप में ही जाना जाता है। विभाग द्वारा इसके विकास के लिये कोई योजना नहीं है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि यह फल यूनिवर्सिटी के लिये शोध का विषय हो सकता है। ❑

10 लाख छात्रों को मिलेगी वर्दी

हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा लागू की गई महत्वाकांक्षी अटल स्कूल वर्दी योजना शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी पहल साबित होगी। योजना के तहत सरकारी स्कूलों में पहली से दसवीं तक सभी छात्रों को वर्ष में दो बार नि:शुल्क वर्दी दी जाएगी। योजना पर प्रतिवर्ष 64 करोड़ रुपये खर्च होंगे। मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने योजना के शुभारम्भ अवसर पर जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि योजना से वर्तमान में 9,27,205 से अधिक छात्रों को लाभ मिलेगा, जिनमें 4,63,680 लड़के व 4,63,525 लड़कियां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि वर्दी को बाकायदा सुन्दरनगर के इंजीनियरिंग कॉलेज के टैक्सटाइल विभाग द्वारा डिजाइन किया गया है। इस मौके पर धूमल ने कहा कि राज्य में शिष्य-शिक्षक अनुपात सर्वश्रेष्ठ है जोकि राष्ट्रीय स्तर के 40.1 के मुकाबले 18.1 है। राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में कुल बजट का 19 प्रतिशत व्यय किया जा रहा है जिसकी प्रतिशतता देश में सर्वाधिक है। ❑

सेब को विशेष उत्पाद का दर्जा देने का आग्रह

देश की मंडियों में आयातित सेब की भरमार से प्रदेश के सेब उत्पादकों को सुरक्षित करने के लिये प्रदेश सरकार ने केन्द्र सरकार से सेब को विशेष उत्पाद का दर्जा देने का आग्रह किया है। बागवानी मंत्री नरेंद्र बरागटा ने नई दिल्ली में वाणिज्य मंत्रालय के उच्चाधिकारियों के साथ विस्तृत विचार-विमर्श के दौरान यह आग्रह किया। बैठक में स्थानीय फसलों की विभिन्न किस्मों के संरक्षण एवं इसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यात के विभिन्न अवसरों की सम्भावनाओं का पता लगाने के लिये विस्तृत चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि राज्य में 2500 करोड़ की आर्थिकी प्रतिवर्ष अकेले सेब पर निर्भर करती है और यह राज्य का मुख्य फल उत्पाद है। जिसे देश भर की विभिन्न मंडियों में 'ब्रांड हिमाचल' के नाम से बेचा जाता है। उन्होंने इस अवसर पर आयातित सेब पर सीमा शुल्क को 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 80 प्रतिशत करने का मामला भी उठाया। ❑

35 रुपये पर जी रही आधी से ज्यादा आबादी

केन्द्र सरकार भले ही वर्ष 2020 तक गरीबी पूरी तरह मिटाने का दम भर रही हो, लेकिन आंकड़े हकीकत का दूसरा ही आईना दिखा रहे हैं। देश की करीब 60 फीसदी ग्रामीण आबादी रोजाना 35 रुपये से कम पर ही गुजर कर रही है। कांच की इमारतों और चमचमाती सड़कों से इतर शहरों का सच भी कुछ अलग नहीं है। वहां करीब 60 फीसदी आबादी रोजाना 66 रुपये से कम पर जीवनयापन कर रही है। यह आंकड़े खुद सरकार के एक सर्वे में सामने आए हैं।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन की रिपोर्ट बताती है कि ग्रामीण क्षेत्र के 10 प्रतिशत लोग तो रोजाना 15 रुपये से कम पर ही जीवन बिता रहे हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों की 10 प्रतिशत जनसंख्या दैनिक गुजर बसर के लिये औसतन 20 रुपये ही जुटा पाती है। जुलाई 2009 से जून 2010 के दौरान 66वें दौर का यह सर्वे किया गया। इसके मुताबिक ग्रामीण क्षेत्रों में अखिल भारतीय औसत प्रति व्यक्ति उपभोक्ता व्यय 1054 रुपये था। शहरी क्षेत्रों में यह 1984 रुपये पाया गया। ग्रामीण क्षेत्रों की दस प्रतिशत जनसंख्या का औसतन मासिक प्रति व्यक्ति व्यय 453 रुपये और शहरों में 599 रुपये है।

छत्तीसगढ़ और बिहार में सबसे कम एमपीसीई

ग्रामीण क्षेत्रों में छत्तीसगढ़ और बिहार में सबसे कम एमपीसीई करीब 780 रुपये है। ओडिशा और झारखंड में यह 820 रुपये है। ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे अधिक एमपीसीई केरल में 1835 रुपये है। दूसरे-तीसरे स्थान पर पंजाब और हरियाणा में क्रमश: 1649 तथा 1510 रुपये है। शहरी क्षेत्रों में महाराष्ट्र 2437 रुपये, हरियाणा 2321 रुपये, जबकि बिहार 1238 रुपये के साथ सबसे नीचे है। ❑

भारत जैव दवाओं का मुख्य अनुसंधान केन्द्र बन सकता है : रिपोर्ट

उभरते बाजारों के कारण दवा उद्योग में 70 प्रतिशत वृद्धि होगी और भारत को इस क्षेत्र का केन्द्र बनने के लिये जैव दवाओं से जुड़े अवसर का फायदा उठाने से जुड़ी नीतियां बनाने की जरूरत होगी। बायोफार्मा क्षेत्र से जुड़े एक पत्र में कहा गया है कि भारत को अन्वेषण केन्द्र बनने के लिये सहायक नीतियों की जरूरत होगी। इसमें कहा गया है कि भारत को अपने जेनोमिक डाटाबेस, अनुसंधान और नैनोटेक्नोलॉजी का फायदा उठाना चाहिये। यूएसए इंडिया चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष करुणा ऋषि ने इस रिपोर्ट की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा, 'भारत सरकार ने 2010-2020 तक की अवधि को अन्वेषण का दशक घोषित किया है।

इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिये जीव विज्ञान में अन्वेषण आवश्यक होगा।' इस सप्ताह जारी रिपोर्ट को बोस्टन कन्सल्टिंग ग्रुप ने उद्योग, शैक्षणिक विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं से साक्षात्कार के आधार पर तैयार किया है। ❑

मीठा होगा समुद्र का खारा पानी

वाटर डिसैलिनेशन का यह अनूठा प्रयोग गुजरात सरकार द्वारा किया जा रहा है। आज जिस तरह देश में मीठे पानी की कमी है, उसे देखते हुए समुद्र के खारे पानी को मीठा बनाने के लिये गुजरात के सूरत शहर के पास दहेज में डिसैलिनेशन प्लांट लगाया जाएगा जिससे आने वाले दिनों में देश को मीठे पानी की किल्लत से निजात मिल सके। इसके लिये गुजरात सरकार ने जापान एवं सिंगापुर की कम्पनियों के साथ समझौता किया है।

शुरुआती दौर में यह प्लांट दहेज स्थित उद्योग को स्वच्छ जल की आपूर्ति करेगा। इसके साथ ही ऊर्जा संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता दिखाते हुए खारे पानी को मीठा बनाने में सोलर एनर्जी का उपयोग किया जाएगा। दहेज में प्रयोग की जाने वाली यह तकनीक एशिया में नवीनतम होगी तथा समुद्र के खारे पानी को मीठे पानी में बदलने वाला यह एशिया का सबसे बड़ा प्लांट होगा। इस अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि वैश्विक स्तर पर प्रोजेक्ट वाटर मैनेजमेंट का एक भाग होगा। ❑

रा. स्व. संघ का तृतीय वर्ष संघ शिक्षा वर्ग आरम्भ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय वर्ष संघ शिक्षा वर्ग 14 मई 2012 को नागपुर में सम्पन्न हुआ। 30 दिन तक चलनेवाले इस वर्ग में भारत के विविध राज्यों के एक हजार से अधिक स्वयंसेवक शामिल हुए हैं। उद्घाटन समारोह के विशेष अतिथि शहर के महापौर अनिल जी सोले थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह सुरेश जी सोनी ने दीप प्रज्वलन कर इस वर्ग का उद्घाटन किया। संघ शिक्षा वर्ग के सर्वाधिक डॉ. जयंतीभाई भाडेसिया, वर्ग के कार्यवाह जसवंत जी खत्री एवं वर्ग के पालक अधिकारी डॉ. मनमोहन जी वैद्य मंच पर उपस्थित थे।

सहसरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबळे जी ने इस वर्ग में आए सवयंसेवकों का स्वागत करते हुए इस वर्ग की रूपरेखा प्रस्तुत की और मंच पर उपस्थित सहसरकार्यवाह सुरेश जी सोनी एवं अन्य अधिकारीगण का परिचय दिया।

गुजरात के प्रांत संघचालक डॉ. जयंतिभाई भाडेसिया इस तृतीय वर्ष संघ शिक्षा वर्ग के सर्वाधिकारी, जोधपुर के प्रांत कार्यवाह जसवंत जी खत्री कार्यवाह और रा.स्व. संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहनजी वैद्य इस वर्ग के पालक अधिकारी हैं।

सुरेश सोनी ने अतिथि महापौर अनिल सोले का स्वागत किया। अपने भाषण में अनिल सोले ने नागपुर शहर के प्रथम नागरिक के नाते इस वर्ग के लिये देश भर से आए स्वयंसेवकों का स्वागत किया। उन्होंने नागपुर शहर के विकास के लिये चल रहे कार्यक्रमों की जानकारी भी दी।

सहसरकार्यवाह सुरेश सोनी ने स्वयंसेवकों को उद्बोधित किया। उन्होंने कहा कि परस्पर परिचय, विचारों का आदान-प्रदान, समन्वय और आदर्श व्चयवहार से ही कार्यकर्ताओं का विकास होता है। स्वयंसेवकों को देश के लिये कृतसंकल्प साधक बतलाते हुए उन्होंने इस वर्ग में से विवेक भाव और वैराग्यशील वृत्ती से उत्तम गुणों का संचयर करने का आवाहन किया। जसवंतजी खत्री ने आभार प्रदर्शन किया। ❑ (न्यूज भारती)

लिब्रहान आयोग की रपट निराधार

लिब्रहान आयोग की रपट को सीबीआई ने एक बार फिर से खारिज कर दिया है। सीबीआई ने स्पष्ट कर दिया है कि अयोध्या के विवादित ढांचे को गिराने के लिये किसी साजिश के तहत धन जुटाए जाने की आयोग की आशंका निराधार है। सीबीआई ने पिछले साल ही आयोग की रपट के आधार पर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी समेत कुछ अन्य भाजपा व संघ नेताओं की भूमिका की नए सिरे से जांच से इन्कार कर दिया था। पर गृह मंत्री पी. चिदम्बरम चाहते थे कि नए सिरे से जांच होनी चाहिये। ❑

आगरा के मन:कामेश्वर मंदिर में बना राष्ट्र मंदिर

आगरा में रावतपाड़ा क्षेत्र में प्राचीन मन:कामेश्वर मंदिर में राष्ट्र मंदिर की स्थापना की गई है। इस मंदिर का उद्घाटन थल सेनाध्यक्ष जनरल विजय कुमार सिंह ने किया। इस मंदिर में देश के लिये प्राण न्योछावर करने वाले नेताओं, क्रांतिकारियों और देश भक्त बलिदानियों की प्रतिमाएं स्थापित की जाएंगी। एक भव्य कार्यक्रम में जनरल सिंह और उनकी धर्मपत्नी ने इस मंदिर के उद्घाटन समारोह में भाग लिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सनातन हिन्दू धर्म के अलावा अन्य प्रमुख सम्प्रदायों के प्रमुख व्यक्तियों ने भी भाग लिया। ❑

25 हजार करोड़ रुपये का होगा कृषि रसायन बाजार

देश का कृषि रसायन कारोबार 2015 तक बढ़कर 25,000 करोड़ रुपये पर पहुंच जाएगा। उद्योग मंडल एसोचैम ने कहा है कि कृषि रसायन के सकारात्मक प्रभाव और कृषि उपज पर उनके लाभ को देखते हुए यह क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। फिलहाल कृषि रसायन बाजार 16 हजार करोड़ रुपये का है। चैम्बर की ओर से जारी बयान में कहा गया है, 'कृषि उपज पर कृषि रसायन के सकारात्मक प्रभाव को लेकर जागरुकता बढ़ रही है। साथ ही फसल सुरक्षा की जरूरत और घरेलू बागवानी एवं पुष्प उद्योग के आगे बढ़ने से देश में कृषि रसायन का बाजार तेजी से बढ़ रहा है।' एसोचैम ने कहा है कि इस क्षेत्र में विदेशी निवेश की व्यापक सम्भावनाएं हैं। 2015 तक देश का कृषि रसायन बाजार 25 हजार करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर जाएगा। चैम्बर ने कहा है कि कृषि रसायन उद्योग में विकास की व्यापक सम्भावनाओं को देखते हुए किसानों को इसके इस्तेमाल के बारे में जागरूक किये जाने की जरूरत है। कृषि रसायन उत्पादन के मामले में भारत दुनिया में चौथे स्थान पर है। ❑

कमजोर राष्ट्रीय नेतृत्व एवं सीमा सुरक्षा की उपेक्षा

❑ सुभाष चंद्र सूद

किसी भी देश की सम्पन्नता उसके आंतरिक एवं वाह्य सैनिक-सिविल सुरक्षा की गारंटी पर ही निर्भर है। भारत जैसा देश जो चहूं ओर से आंतरिक एवं वाह्य शत्रुओं से घिरा हुआ है वहां यह अधिक लागू होती है। दुर्भाग्य से हमारे देश में रक्षा सेनाओं, उनकी सैन्य उपकरणों की आपूर्ति एवं आधुनिकीकरण के प्रति घोर राष्ट्रीय उपेक्षा एवं उदासीनता का भाव अत्यंत चिंता का विषय है। विदेशी आक्रमणों के समय में भी हमारे पराभव के कारणों में एक महत्वपूर्ण कारण हमारे पास आधुनिकतम अस्त्र शस्त्रों का न होना भी था।

आज भारतीय नवयुवक कुशल कम्प्यूटर ज्ञानी, सफल व्यवसायी, फैशन डिजाइनर, फिल्मी अभिनेता, राजनैतिक तो बनना चाहता है परन्तु भारतीय थल, जल एवं नभ सेना में भी देश की सेवा के साथ उसका एक उज्ज्वल भविष्य है यह दिशा देने वाले लोग आज बहुत कम है। हमारा राजनीतिक नेतृत्व तो इस बारे में घोर दिशाहीन एवं लापरवाह है। घोर भौतिकवादी, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न देशों में अमेरिका, जर्मनी, इंग्लैंड, रूस, जापान एवं इजरायल में भी वहां के सभी नवयुवकों को अपने अध्ययन पाठ्यक्रम के साथ-साथ एक लघुतम सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य है।

भारत द्वार अग्नि-5 का सफल परीक्षण, आरआईसेट-1 का अंतरिक्ष में सफल प्रक्षेपण उसकी उभरती आईटी वैज्ञानिक प्रतिभा शक्ति, खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता, विश्व का सबसे बड़ा जनसंख्या का लोकतांत्रिक देश आदि विशेषताओं के कारण भारत महाशकित बनने हेतु सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का दावा तो ठोक रहा है वहां उभरते भारत की अंगड़ाई से परेशान उसके पड़ोसी चीन और पाकिस्तान, भारत की सैनिक, कूटनीतिक घेरेबंदी कर यहां इस्लामिक, जिहादी आतंकवाद, कम्युनिज्म प्रेरित नक्सली आतंकवाद को निरंतर प्रोत्साहन दे रहे हैं।

अभी-अभी भारत द्वार अग्नि-5 का सफल परीक्षण, आरआईसेट-1 का अंतरिक्ष में सफल प्रक्षेपण उसकी उभरती आईटी वैज्ञानिक प्रतिभा शक्ति, खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता, विश्व का सबसे बड़ा जनसंख्या का लोकतांत्रिक देश आदि विशेषताओं के कारण भारत महाशकित बनने हेतु सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का दावा तो ठोक रहा है वहां उभरते भारत की अंगड़ाई से परेशान उसके पड़ोसी चीन और पाकिस्तान, भारत की सैनिक, कूटनीतिक घेरेबंदी कर यहां इस्लामिक, जिहादी आतंकवाद, कम्युनिज्म प्रेरित नक्सली आतंकवाद को निरंतर प्रोत्साहन दे रहे हैं। जिलों के कलेक्टर, विधायकों का सरेआम अपहरण होकर माओवादी नक्सली सारे प्रशासन को खुली चुनौती देते हैं और देश असहाय होकर केन्द्रीय नेतृत्व को सहायता हेतु निहारता है। सीमाओं पर से अवैध रूप से नशीले पदार्थों चरस, स्मैक, अफीम का कारोबार कर हमारी युवा शक्ति को नशेड़िये एवं नपुंसक बनाने का षड्यंत्र चल रहा है। जाली करंसी का अवैध प्रसारण कर देश की अर्थव्यवस्था को चौपट करने की शातिर चाल चली जा रही है। हमारी सारी सीमाएं असुरक्षित एवं साधनहीन है। वहां कश्मीर, अरुणाचल, सिक्किम सीमा पर पड़ोसी देशों की सेनाओं का भारी जमाव एवं दबदबा है।

आजादी पूर्व एवं 60-70 के दशक का देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम का जज्बा, राष्ट्रीय समर्पण आज समाप्त दिखाई पड़ता है। इसके दो मुख्य कारण हैं। पहला हमारे राष्ट्रीय जीवन में केवल दिशाहीन भ्रष्ट राजनीति का छा जाना और राजनीति का परिवारीकरण एवं व्यवसायीकरण द्वारा अवमूल्यन। दूसरा बौद्धिक विचार क्षेत्र में मेकाले (पश्चिमी प्रेमी) मार्क्सपुत्रों (कम्युनिस्ट विचार प्रणाली) का वर्चस्व जिन्होंने राष्ट्र प्रेम, मातृप्रेम, राष्ट्र गौरव स्वदेशी जैसी उदात्त भावना को अंतर्राष्ट्रीयता, मानवतावाद, वर्ग संघर्ष, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद आदि निरर्थक शब्दावली में उलझा कर हमें और हमारी युवा पीढ़ी को श्रद्धा, प्रेरणाशून्य, भौतिक प्राणी मात्र बना दिया है। पूर्व में भी भारत कभी आर्थिक रूप से सम्पन्न सोने की चिड़िया का देश प्रसिद्ध था। विदेशी हमलावर यहां के आर्थिक वैभव को लूटने, व्यापार का बहाना बनाकर आए थे परन्तु अपने कमजोर राष्ट्रीय केन्द्रीय नेतृत्व, अपनी सेनाओं सीमाओं के प्रति दुलक्ष्य एवं आपसी फूट के कारण हमें चिरकाल तक गुलामी भोगनी पड़ी। समय रहते सभी राष्ट्रभक्तों, विचारकों एवं प्रबुद्ध नेताओं को अपने इस राष्ट्रीय दुर्लक्ष्य के प्रति गम्भीर चिंतन की आवश्यकता है अन्यथा हम पुन: घोर संकट में पड़ सकते हैं।❑

संसद में कार्टून विवाद

एनसीईआरटी की एक पाठ्यपुस्तक में छपे डॉ. भीमराव अम्बेडकर के कार्टून को लेकर विगत दिनों संसद में जो कुछ हुआ वह संकीर्ण असहिष्णु राजनीति का एक और उदाहरण है। यह कार्टून 1949 में प्रख्यात कार्टूनिस्ट केशव शंकर पिल्ले की 'शंकर वीकली' में छपा था। शंकर महज कार्टूनिस्ट ही नहीं अपितु उस दौर के शीर्ष राजनेताओं के सक्रिय सम्पर्क में रहने वाले चर्चित व्यक्तित्व थे जिन्हें भारत में 'राजनीतिक कार्टून' प्रचलन करने वाले प्रणेता के रूप में जाना जाता है।

चित्रकला के माध्यम से कार्टून बनाकर व्यंग्य करना एक दुर्लभ प्रकृति प्रदत मानवीय गुण है जिस विधा के द्वारा हम किसी गम्भीर, कठिन विषय को भी चित्र व्यंग्य द्वारा पाठकों को सरल ढंग से समझा सकते हैं। केशव शंकर पिल्ले, सुधीर तलंग, रंगा, आरके लक्ष्मण, इरफान आदि अनेकों प्रख्यात कार्टूनिस्ट हमारे दैनन्दिन जीवन में व्यंग्य चित्रकला द्वारा हमारे सामाजिक राजनीतिक जीवन को हलका एवं रसमय बनाते हैं।

संसद में जिस कार्टून पर विवाद एवं उत्तेजना प्रकट हुई वह 1949 में संविधान बनने की प्रक्रिया के पूर्व घटनाक्रम पर है जब सारा देश संविधान रचना का बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था। इस घटनाक्रम पर किसी का उपहास उड़ाने का कोई सोच भी कैसे सकता है? एक बार यह पुन: सिद्ध हो गया है कि जिन राजनेताओं से एक परिपक्व, शालीन व्यवहार की अपेक्षा की जाती है वे अपने संकीर्ण, क्षुद्र राजनीतिक पूर्वाग्रहों से ऊपर नहीं उठ पाते। शायद इसीलिये संसद एवं संसद सदस्यों की गरिमा एवं मान प्रतिष्ठा पर उंगलियां उठ रही है और बाबा रामदेव एवं अन्ना हजारे जैसे सामाजिक नेताओं की बातों पर समाज विश्वास करने लगा है।

इस संदर्भ में एक ओर महत्वपूर्ण बात अवश्य चिंताजनक है। एनसीईआरटी की पुस्तकों की रचना करने वाले अधिकांश लेखक मेकाले शिक्षा प्रेमी एवं मार्क्स प्रेमी पुराने कम्युनिस्ट हैं जिनकी भर्ती योजनाबद्ध ढंग से पूर्व शिक्षामंत्रियों नरुल हसन, अर्जुन सिंह के समय हुई है। इन लेखकों का किसी भी विषय प्रतिपादन का ढंग प्राय: पश्चिमी विचारों पर ही होता है जहां का समाज अपनी वाल्यावस्था में ही अधिक जागरुक हो जाता है। हाई स्कूल के बच्चों को विशेषकर ग्रामीण परिवेश में पलने वाले बच्चे अनेक बार कार्टून एवं व्यंग्य को ठीक समझ नहीं पाते, अच्छा होता यह कार्टून शिक्षा विधा हम कालेज, विश्वविद्यालय स्तर पर आरम्भ करें। पूर्व में भी एनसीईआरटी के इन राजनीतिक प्रतिबद्ध लेखकों पर इतिहास, साहित्य को एक विशेष साम्यवादी व्याख्या देने की कोशिश करने के आरोप लगे हैं। सिक्ख गुरुओं, जैन मुनियों, देशभक्त क्रांतिकारियों पर इन लेखकों ने अप्रासंगिक, आधारहीन एवं विवादग्रस्त टिप्पणियां लिखी थी जिन की तीखी सामाजिक प्रतिक्रिया हुई थी।❑

एक बार यह पुन: सिद्ध हो गया है कि जिन राजनेताओं से एक परिपक्व, शालीन व्यवहार की अपेक्षा की जाती है वे अपने संकीर्ण क्षुद्र राजनीतिक पूर्वाग्रहों से ऊपर नहीं उठ पाते। शायद इसीलिये संसद एवं संसद सदस्यों की गरिमा एवं मान प्रतिष्ठा पर उंगलियां उठ रही है और बाबा रामदेव एवं अन्ना हजारे जैसे सामाजिक नेताओं की बातों पर समाज विश्वास करने लगा है।

With best compliments from

Ambuja Cement

अकेले किसान ने खोदा तालाब

दुनिया में इतिहास रचने वालों की कोई कमी नहीं है। कुछ लोग अपना नाम चमकाने के लिये इतिहास रचते हैं तो कुछ लोग निस्वार्थ रूप से अपना कार्य करते हैं और उन्हें पता भी नहीं चलता है कि उन्होंने इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिख दिया है। बिहार के गया जिले के दशरथ मांझी एक ऐसे ही इतिहास रचयिता रहे हैं जिन्होंने अपनी पत्नी के ईलाज में बाधक बने पहाड़ को काटकर सड़क निर्माण किया था। दशरथ मांझी की कहानी आज बिहार के स्कूली किताबों में दर्ज है जिसका शीर्षक है- पहाड़ से ऊंचा आदमी। ठीक ऐसी ही कहानी है झारखंड के किसान श्यामल चौधरी की।

सौ गुणा सौ की लम्बाई तथा 12 फीट गहरे इस तालाब को खोदने का काम उन्होंने 14 वर्ष में पूरा कर डाला। 65 वर्षीय इस जुझारू किसान को यह विचार उस समय आया जब उन्होंने अधिकारियों से अपनी जमीन पर पटवन के लिये एक तालाब की मांग की थी जो उन्हें नहीं मिला।

उन्होंने अकेले ही अपने अथक प्रयास से तालाब का निर्माण कर डाला और गांव के खेतों के लिये सिंचाई का पानी उपलब्ध करा दिया। दुमका जिला स्थित जरमुंडी ब्लाक के किशुनपुर-कुरूआ गांव के श्यामल चौधरी आज क्षेत्र के किसानों के लिये आदर्श बन चुके हैं। सौ गुणा सौ की लम्बाई तथा 12 फीट गहरे इस तालाब को खोदने का काम उन्होंने 14 वर्ष में पूरा कर डाला। 65 वर्षीय इस जुझारू किसान को यह विचार उस समय आया जब उन्होंने अधिकारियों से अपनी जमीन पर पटवन के लिये एक तालाब की मांग की थी जो उन्हें नहीं मिला। फिर क्या था प्रतिदिन थोड़ी-थोड़ी मिट्टी काटकर अकेले ही तालाब का निर्माण कर दिया। यह काम उन्होंने वर्ष 1997 में शुरू किया था और 2011 में पूर्ण किया। आठवीं पास श्यामल के निर्णय पर शुरू में लोग मजाक उड़ाया करते थे, उन्हें ताना देते थे, ऐसे कई अवसर आए जब उनके हौसले को तोड़ने की कोशिश की गई, कई बार स्वास्थ्य ने भी साथ छोड़ा और वह गम्भीर रूप से बीमार हुए लेकिन यह स्वाभिमानी किसान अपनी धुन में लगा रहा, बिना किसी बात की परवाह किये। आखिरकार चुनौती ने भी अपने हथियार डाल दिये और उनके संकल्प की जीत हुई। इस उम्र में जबकि इंसान अपनी सेहत के आगे बेबस होने लगता है, जब उसके हाथ पैर उसके काबू में नहीं रहते हैं, उसके लिये घर की चारपाई ही एकमात्र सहारा होती है, ऐसी उम्र में श्यामल चौधरी ने तालाब खोदकर नई पीढ़ी को भी संदेश दे दिया। ❑

उजाड़ पहाड़ बना हरा भरा जंगल

उड़ीसा में यूं तो अनेक विद्यालय हैं लेकिन देवगढ़ जिले के गोड़भंगा गांव में स्थित विद्यालय कुछ खास है। इस विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र न केवल अपने पाठ्यक्रम की पढ़ाई करते हैं बल्कि वे वृक्षों के बारे में भी जागरूक हैं। उनके प्रेरणास्रोत हैं शिक्षक रमाकांत प्रधान। रमाकांत प्रधान व उनके छात्रों ने जो कर दिखाया उस उदाहरण से सभी को प्रेरणा लेनी चाहिये। क्योंकि यह कार्य सरकार का वन विभाग भी नहीं कर पा रहा था। रमाकांत व उनके छात्रों ने अपने स्कूल के सामने स्थित एक पहाड़, जिस पर पेड़ नहीं थे, को कुछ वर्षों में एक जंगल में परिवर्तित कर दिया। इस जंगल का नाम मां रंभादेवी जंगल है। रमाकांत प्रधान व उनके छात्रों द्वारा विकसित यह जंगल लगभग 100 एकड़ जमीन पर फैला हुआ है। इस जंगल की रखवाली भी रमाकांत इन छात्रों के सहयोग से करते हैं और आस-पास के गांवों के लोग भी सहयोग देते हैं।

देवगढ़ जिले के बारकोट प्रखण्ड से 32 किलोमीटर दूर गोड़भंगा गांव में स्थित स्वास्तिक विद्यालय में दो कक्षाएं हैं। यहां छठी व सातवीं कक्षा की पढ़ाई होती है। इस विद्यालय में लगभग 150 बच्चे अध्ययन करते हैं, जिसमें से 80 छात्रावास में रहते हैं। यहां कार्यरत शिक्षक रमाकांत प्रधान, उनके छात्रों व स्थानीय ग्रामवासियों ने 22 वर्षों के अथक परिश्रम से यह जंगल खड़ा किया है।

श्री प्रधान का मानना है कि जंगल के खत्म हो जाने से मनुष्य सहित सभी जीव जंतु खत्म हो जाएंगे। इस कारण जंगल को बचाना जरूरी है। अपने गुजारे के लिये व्यक्ति कोई भी काम करे, लेकिन पौधारोपण व जंगल सुरक्षा न करने पर उसकी जिन्दगी निरर्थक हो जाएगी। ❑

बढ़ रहे हैं अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर अत्याचार

मानवाधिकार रिपोर्ट का खुलासा

सर्वधर्म समभाव और वसुधैव कुटुम्बकम् को जीवन का आधार मानने वाले हिन्दुओं की स्थिति इन दिनों काफी दयनीय होती जा रही है। खासकर उन देशों में और भी बदतर हो गई है जहां वे अल्पसंख्यक हैं। दक्षिण एशिया के देशों में रह रहे हिन्दू अल्पसंख्यकों के खिलाफ अत्याचार के मामले बढ़े हैं। इनमें जबरन मतांतरण, यौन उत्पीड़न, धार्मिक स्थलों पर आक्रमण, सामाजिक भेदभाव, सम्पत्ति हड़पना आम बात हो गई है।

भारत से बाहर रह रहे हिन्दुओं की आबादी लगभग 20 करोड़ है। बांग्लादेश, भूटान, पाकिस्तान और श्रीलंका के साथ-साथ फिजी, मलेशिया, त्रिनिदाद-टोबेगो ऐसे देश हैं जहां अच्छी खासी संख्या में हिन्दू रहते हैं। हाल के वर्षों में कुछ देशों में राजनीतिक स्तर पर भी हिन्दुओं के साथ भेदभाव की शिकायतें सामने आई हैं।

भारत से बाहर रह रहे हिन्दुओं की आबादी लगभग 20 करोड़ है। बांग्लादेश, भूटान, पाकिस्तान और श्रीलंका के साथ-साथ फिजी, मलेशिया, त्रिनिदाद-टोबेगो ऐसे देश हैं जहां अच्छी खासी संख्या में हिन्दू रहते हैं। हाल के वर्षों में कुछ देशों में राजनीतिक स्तर पर भी हिन्दुओं के साथ भेदभाव की शिकायतें सामने आई हैं।

हिन्दू अमेरिकन फाउंडेशन की आठवीं वार्षिक मानवाधिकार रिपोर्ट में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों का खुलासा हुआ है। यह रिपोर्ट 2011 की है, जिसे हाल ही में जारी किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान में 1947 में कुल आबादी का 25 प्रतिशत हिन्दू थे। अभी इनकी जनसंख्या कुल आबादी का मात्र 1.6 प्रतिशत रह गई है। वहां गैर-मुस्लिम के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार हो रहा है। 24 मार्च, 2005 में पाकिस्तान में नए पासपोर्ट में धर्म की पहचान को अनिवार्य कर दिया गया। स्कूलों में इस्लाम की शिक्षा दी जाती है। गैर-मुस्लिम, खासकर हिन्दुओं के साथ असहिष्णु व्यवहार किया जाता है। जनजातीय बहुल इलाकों में अत्याचार ज्यादा है। इन क्षेत्रों में इस्लामिक कानून लागू करने का भारी दबाव है। हिन्दू युवतियों और महिलाओं के साथ दुष्कर्म, अपहरण की घटनाएं आम हैं। उन्हें इस्लामिक मदरसों में रखकर जबरन मतांतरण का दबाव डाला जाता है।

इसी तरह बंग्लादेश में भी हिन्दुओं पर अत्याचार के मामले तेजी से बढ़े हैं। बंग्लादेश ने वेस्टेड प्रॉपर्टीज रिटर्न बिल-2011 को लागू किया है, जिसमें जब्त की गई या मुसलमानों द्वारा कब्जा की गई हिन्दुओं की जमीन को वापिस लेने के लिये क्लेम करने का अधिकार नहीं है। इस बिल के पारित होने के बाद हिन्दुओं की जमीन कब्जा करने की प्रवृति बढ़ी है और इसे सरकारी संरक्षण भी मिल रहा है।

इसके अलावा हिन्दू इस्लामी कट्टरपंथियों के निशाने पर भी हैं। उनके साथ मारपीट, दुष्कर्म, अपहरण, जबरन मतांतरण, मंदिरों में तोड़फोड़ और शारीरिक उत्पीड़न आम बात है। अगर यह जारी रहा तो अगले 25 वर्षों में बंग्लादेश में हिन्दुओं की आबादी ही समाप्त हो जाएगी। वहीं बहु-धार्मिक, बहु-सांस्कृतिक और बहुभाषी देश कहे जाने वाले भूटान में भी हिन्दुओं के खिलाफ अत्याचार हो रहा है। 1990 के दशक में दक्षिण और पूर्वी इलाके से एक लाख हिन्दू अल्पसंख्यकों और नियंगमापा बौद्धों को बेदखल कर दिया गया। ईसाई बहुल देश फिजी में हिन्दुओं की आबादी 34 प्रतिशत है। स्थानीय लोग यहां रहने वाले हिन्दुओं को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। 2008 में यहां कई हिन्दू मंदिरों को निशाना बनाया गया। हिन्दू अमेरिकन फाउंडेशन की आठवीं वार्षिक मानवाधिकार रिपोर्ट में जम्मू-कश्मीर में हिन्दुओं के खिलाफ हो रहे अत्याचार का भी जिक्र है। पाकिस्तान ने कश्मीर के 35 फीसदी भू-भाग पर अवैध तरीके से कब्जा कर रखा है। 1980 के दशक से यहां पाकिस्तान समर्थित आतंकी सक्रिय हैं। कश्मीर घाटी से अधिकांश हिन्दू आबादी का पलायन हो चुका है। तीन लाख से ज्यादा कश्मीरी हिन्दू अपने ही देश में शरणार्थी के तौर पर रह रहे हैं। कश्मीरी पंडित रिफ्यूजी कैम्प में बदतर स्थिति में रहने को मजबूर हैं। यह चिंता की बात है कि दक्षिण एशिया में रह रहे हिन्दुओं पर अत्याचार के मामले लगातार बढ़ रहे हैं, लेकिन चंद मानवाधिकार संगठनों की बात छोड़ दें तो वहां रह रहे हिन्दुओं के हितों की रक्षा के लिये आवाज उठाने वाला कोई नहीं है। ❑

कन्या भ्रूण हत्या जघन्य पाप

कन्या भ्रूण हत्या है जघन्य पाप
नहीं हो सकता, ये अपराध माफ
अगर यूं ही घटती रही कन्याएं,
तो कैसा होगा समुचित विकास।
यह यक्ष प्रश्न मुंह बाए खड़ा आज,
जागो विश्व गुरु वैदिक संस्कृति के सरताज।
एक बेटी पढ़े, दो परिवार पढ़े
सब पढ़ें, देश आगे बढ़े।
कहते हैं महापुरुष लाख पते की बात,
शिक्षा, संस्कृति ज्ञान से मिटे अंधोरी की रात।
कन्या विहीन समाज है पतन का आगाज़
नहीं पैदा होंगे शिवाजी, भरत, सुभाष फिर आज।
अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा,
जागो मेरे समाज के प्राणी।
भ्रूण हत्या रोककर लिखो अमर कहानी,
कन्या बिन सूनी जीवन बेला सुहानी।
कन्या भ्रूण हत्या को बनाओ,
भूत की काल्पनिक कहानी।
यही है समुचित शाश्वत सामायिकी,
अमृत तुल्य सदुपयोगी ईश वाणी!

– **रवि कुमार सांख्यान**, मैहरी, बिलासपुर

हम भी तो कुछ देना सीखें

ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें
जो कुछ हमें मिला है प्रभु से, वितरण उसका करना सीखें।।

हवा प्रकाश हमें मिलता है, मेघों से मिलता है पानी।
यदि बदले में कुछ नहीं देते, इसे कहेंगे बेईमानी।।
इसीलिये दु:ख भोग रहे हैं, दु:ख को दूर भगाना सीखें।।
ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।।

तपती धरती पर पथिकों को, पेड़ सदा देते हैं छाया।
अपना फल स्वयं न खाकर, जीवन धन्य बनाया।
दशांश पहले प्रभु को देकर, बाकी स्वयं बरतना सीखें।
ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।।

मानव जीवन दुर्लभ है हम, इसको मल से रहित बनाएं।
खिले फूल खुशबू देते हैं, वैसे ही हम भी बन जाएं।।
तप-सेवा सुमिरन से जीवन प्रभु को अर्पित करना सीखें।
ईश हमें देते हैं सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखें।।

असत् नहीं यह प्रभुमय दुनिया, और नहीं है यह दुखदायी।
दिल-दिमाग को सही दिशा दें, तो बन सकती है सुखदायी।।
जन को प्रभु देते हैं सब कुछ लेकिन जन तो बनना सीखें।
ईश हमें देते हैं सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखें।।

– **राजकुमार जैन**, कुल्लू

गीतिका

नित्य स्वयं से लड़ते हैं
अपनों से ही झगड़ते हैं।
जो थे आंखों के तारे
आंखों में अब खटकते हैं।
अपनी गलियों के कांटे
मुश्किल से उखड़ते हैं
राजनीति का हाथ पकड़
लोग ऊंचाईयां चढ़ते हैं
मूल्य न रहा प्रतिभा का
विकृत राह पकड़ते हैं
कौन झांकता निज उर में
दोष अन्य पर मढ़ते हैं
सत्ता पर सब बलिहारी
कोविद् नाक रगड़ते हैं
ऊपर छूंए भले आकाश
धरती पर धाड़ाम पड़ते हैं।
निष्ठा से श्रम जो करते
अपनी किस्मत गढ़ते हैं
उपदेशों की बात न कर
आदर्शों की सीढ़ी चढ़ते हैं।
देखभाल हो जिन पौधों की
वे पौधे अवश्य बढ़ते हैं।

– **रमेशचंद्र शर्मा चंद्र**
डी-4, उदय हाउसिंग स्पेस
बैजलपुर, अहमदाबाद

केवल कानून और अदालतों से नहीं होगी नारी रक्षा

मनजीत कौर, एसीपी जालंधर, बीएसएफ से सेवानिवृत्त हुए अधिकारी श्री सरदार बनारसी सिंह की सुपुत्री हैं। पिता ने बचपन से ही उन्हें खेलों में अग्रणी रहने का स्वप्न दिखाया। खिलाड़ियों को मिले विशेष उत्साहजनक आरक्षण के कारण मनप्रीत 2001 में एम.ए. (इतिहास) उत्तीर्ण करने के बाद सीधा पंजाब पुलिस में इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त हुई। 10 साल की मेहनत के बाद 2001में मनजीत कौर को जालंधर के पुलिस कमिश्नर कार्यालय में पुलिस सह-आयुक्त के रूप में पदोन्नति मिली।

सह आयुक्त पद पर मनजीत कौर को पहली जिम्मेदारी स्पेशल ब्रांच के कार्यभार के रूप में मिली जहां पुलिस के कई सामान्य कार्य जैसे–गुप्तचरी, पासपोर्ट के लिये छानबीन, हथियार विभाग आदि के अतिरिक्त महिलाओं के विरुद्ध अपराध की शिकायतों का विशेष कार्य शामिल था। मनजीत कौर का कहना है कि महिलाओं के विरुद्ध अपराध की शिकायतों में शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं का अनुपात लगभग बराबर सा है। वास्तव में महिलाओं के विरुद्ध अपराध की शिकायतें कोई भी महिला स्वयं अकेली आकर नहीं करवाती, विवाहित महिला के मायके के सदस्य उसके साथ ही होते हैं।

मनजीत कौर की नजर में ससुराल में तनाव के कारण हैं–

1. अहंकार का टकराव : विवाहित महिलाओं के साथ ससुराल में बढ़ते विवादों के कारण गिनवाते हुए मनजीत कौर का कहना है कि सबसे प्रमुख कारण अहंकार के टकराव का है। आजकल अक्सर यह देखने में आता है कि लड़कियां अधिक पढ़ी-लिखी होती हैं। इस पढ़ाई-लिखाई के कारण वे ससुराल में भी रोक-टोक पसंद नहीं करतीं। जिससे छोटे-छोटे क्लेश बढ़कर विवाद का रूप ले लेते हैं।

2. विवाहेतर सम्बंध : आज के युग में विवाह के अतिरिक्त पर-स्त्री और पर-पुरुष से सम्बंध। पति या पत्नी किसी एक की भी रुचि किसी अन्य स्त्री या पुरुष में हो तो उनके घर में सुख-चैन सम्भव ही नहीं हो सकता। यह परम्परा आधुनिक समाज में बढ़ती जा रही है।

3. पृष्ठभूमि का अज्ञान : इंटरनेट और अखबारों के माध्यम से होने वाले विवाहों में एक-दूसरे की पृष्ठभूमि, खानदान आदि का पता ही नहीं चलता। कई बार तो यह भी पता नहीं लगता कि वर या वधू में किसी एक का पहले विवाह हो चुका था। बाद में धीरे-धीरे जब पृष्ठभूमि के पोल खुलते हैं तो वह विवाद खड़े हो जाते हैं।

4. गलतफहमियां : पति-पत्नी कई बार आपस की गलतफहमियों का शिकार होते हैं और कभी नव-विवाहित की पुरानी आदतें ससुराल वालों को स्वीकार्य नहीं होती। इस प्रकार प्रारम्भ में आपसी समझ में फर्क बढ़ता चला जाता है।

5. दहेज : हालांकि दहेज के वास्तविक और सच्चे मामले 5 से 7 प्रतिशत ही होते हैं। परन्तु अक्सर दहेज को महिलाएं अपने हाथ में अचूक हथियार मानती हैं। कई बार सादा विवाह होने के बावजूद झगड़े के दौरान ससुराल पक्ष को लम्बी-चौड़ी लिस्ट थमा दी जाती है। 498ए के तहत की गई शिकायत में पति व उसका पूरा परिवार बंध जाता है। सिवाय प्रताड़ना के उनके हाथ कुछ नहीं लगता। कई केसों में केवल पैसा पाना ही लड़की पक्ष का उद्देश्य बन जाता है तथा धारा-498ए का वे पूरी तरह दुरुपयोग करते हैं।

6. संस्कृति का बदलाव : संस्कृति का बदलाव समाज में विवादों का मुख्य कारण बन रहा है। विवाह से पहले लोग बेटियों को जीन्स और कैप्रियां पहनने से नहीं रोकते, परन्तु विवाह के बाद कोई भी सास-ससुर इस पहनावे को बर्दाश्त नहीं करता। विवाह से पहले लड़के-लड़कियों की मित्रता की छूट शिक्षा के नाम पर मिल जाती है, परन्तु विवाह के बाद मित्रता के यह रिश्ते विवाद पैदा करने वाले साबित होते हैं। लोगों ने संस्कृति में बिगड़ाव की आदतें तो डाल ली परन्तु सोच नहीं बदली। वास्तव में यह संस्कृति का बिगड़ता रूप ही हमारे समाज में कलह-क्लेश का कारण बना हुआ है।

7. कमाई के लिये गलत मार्ग : वर्तमान में भौतिकवादी सोच युवतियों व महिलाओं पर इतनी हावी हो गई है कि वे पैसा कमाने के लिये शार्टकट रास्ता अख्तियार कर रही हैं। जहां एक ओर सिलाई-कढ़ाई, बुनाई व कुकिंग को महिलाओं की कमाई का एक उत्तम तरीका माना जाता है, वहीं दूसरी ओर आज युवतियां डांस जैसे पेशे को आधुनिकता का नाम देती हैं। देर रात तक विवाह-शादियों में नाचना, शराबियों को शराब परोसना उनकी दिनचर्या में शुमार हो चुका है। ❑

पर्यावरण संरक्षण से स्वास्थ्य की रक्षा, विश्व की रक्षा, प्रकृति की रक्षा

पर्यावरण के वर्तमान वैश्विक संकट (ग्लोबल वार्मिंग) के समाधान हेतु निम्नांकित बिन्दुओं पर विचार करके अपने व्यक्तिगत जीवन, विद्यालय एवं परिवार के व्यवहार में लाने का संकल्प करें।

जल (पानी)

देश में मात्र 20 प्रतिशत शुद्ध जल ही पीने लायक है। वास्तव में पानी की कमी से नहीं इसके दुरव्यय से संकट ज्यादा बढ़ा है। इस हेतु निम्न बातों पर धयान दें–

- पीने हेतु आधाा गिलास जल दें, आवश्यकतानुसार अधिाक दें, फिर भी बचता है तो इस हेतु एक बर्तन रखें। उस पानी का उपयोग अन्य कार्यों हेतु करें।
- स्नान हेतु एक बाल्टी पानी का ही प्रयोग करें।
- कार्यक्रमों में टेबल पर पानी की बोतल न रखते हुए गिलास ढक कर रख सकते हैं।
- अपने घर/संस्थान/विद्यालय में पक्षियों को पीने के लिये पानी एवं दाने की व्यवस्था रखें।
- फ्रिज में भी प्लास्टिक की बोतल के बदले तांबे या अन्य धाातु के बर्तन का प्रयोग करें।
- अशुद्ध पानी के पुन: उपयोग की व्यवस्था करें।
- भोजन समारोह या कार्यक्रमों में भोजन के बाद बचे पानी को इक्ट्ठा करने की व्यवस्था रखें।
- पेयजल हेतु प्लास्टिक की बोतल का प्रयोग न करें।

बिजली

- बिजली, पंखे का आवश्यकतानुसार ही प्रयोग करें, जहां कोई नहीं है, वहां तुरंत बंद करें।
- वातानुकूलन यंत्र (एयरकंडीशन) का प्रयोग अति आवश्यक होने पर ही करें।
- उपयोग करो एवं फेंको (Use and Throw) के रूप में प्लास्टिक का उपयोग न करें।
- सब्जी आदि वस्तुएं खरीदते समय प्लास्टिक की थैली (बैग) के बदले कपड़े या जूट की थैली का प्रयोग करें।
- प्लास्टिक या थर्मोकोल के कप या प्लेट का उपयोग स्वयं तथा अपने पारिवारिक या सामाजिक कार्यक्रमों में न करें।
- कार्यक्रमों में स्वागत हेतु पुष्पगुच्छ या माला के स्थान पर अच्छी पुस्तकें देने की पद्धति विकसित करें।
- विद्यालय में पर्यावरण परिषद (क्लब) का गठन करें।

- **वर्ष में एक बार वृक्षारोपण अवश्य करें तथा उन पौधाों के विकास की भी चिंता करें।**
- **कैन्टीन में फास्टफूड एवं शीतल पेय न रखे जाएं।**
- **भोजन के बाद थाली में एक कण भी जूठा न छोड़ें।**

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि एक समय में एक व्यक्ति चावल का एक दाना छोड़ता है तो देश में एक ही समय में कई क्विंटल चावल बरबाद हो जाते हैं अन्यथा इस चावल से हजारों गरीबों को भोजन प्राप्त हो सकता है।

आइये, हम सब मिलकर जल, बिजली, खाद्यान्न की बचत एवं प्लास्टिक से जमीन को बचाकर अपने कर्तव्य का निर्वहन करें।

देशी गाय ने बचाए मरणासन्न के प्राण

वर्ष 1999 में भटिण्डा (पंजाब) के पास के कस्बे मानसा के देवेंद्र पाल सिंह के दोनों गुर्दे खराब हो गए। डॉक्टरों ने सारे परीक्षण करने के बाद जवाब दे दिया। संयोग से एक संन्यासी वहां आए। उन्होंने अपने पास से एक बोतल निकाली जिसमें कोई अर्क था। उन्होंने दिन में तीन बार वह अर्क रोगी को देना शुरू किया। तीन दिनों में स्थिति में कुछ सुधार आने लगा। तीन महीने निकल गए। घर वाले संन्यासी से अर्क ला कर नियम से देवेंद्र पाल सिंह को देते रहे। स्वास्थ्य तेजी से सुधरने लगा। महीने भर बाद तो वे पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगे। इस बार वे खुद डाक्टर के पास गए। डाक्टर उन्हें जीवित देखकर भौचक्का रह गया। उन्होंने सारे परीक्षण फिर से किये तो निष्कर्ष आया कि देवेंद्र पाल के दोनों गुर्दे एकदम ठीक हैं। चिकित्सक को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह चमत्कार कैसे घटित हुआ। उनके जोर देने पर देवेंद्र पाल सिंह उन्हें भी उस संन्यासी के पास ले गए। पूछने पर संन्यासी ने कहा–

'यह सब गोमाता की कृपा है। बोतल में देशी गाय के मूत्र का अर्क था। गोमूत्र में असाध्य रोगों को ठीक कर देने की क्षमता है।' ❑

बीज में छिपी है खाद्य सम्प्रभुता

यदि किसानों के पास अपना बीज न हो या मुक्त परागण किस्मों तक उनकी पहुंच न हों, जिसे वे सुरक्षित रख सकें या जिसका वे विनिमय कर सकें, तो उनके पास बीज सम्प्रभुता नहीं होगी। पिछले 20 वर्षों में बीज विविधता और बीज सम्प्रभुता के मामले में बड़ी तेजी से क्षरण देखा गया है। अब बीजों में कुछ बड़ी कम्पनियों का नियंत्रण बढ़ गया है।

पूरी दुनिया में नया बीज कानून लाया जा रहा है, जिसमें बीजों का पंजीयन कराना अनिवार्य है। इस प्रकार छोटे किसान अपनी विविध प्रकार की फसलें नहीं उगा सकेंगे और जबरन उन्हें बड़े बीज निगमों पर निर्भर रहना होगा। ये बड़े निगम किसानों द्वारा विकसित मौसम के अनुकूल बीजों का भी पेटेंट करा रहे हैं। इस प्रकार किसानों के बीज और ज्ञान का उपयोग कर वे उन्हें लूट रहे हैं।

2004 से भारत भी एक बीज कानून लाना चाह रहा है, जिसमें किसानों को अपने बीज का पंजीयन कराना होगा। अगर यह कानून लागू हो गया तो किसान स्वदेशी बीजों का उपयोग न करने को मजबूर हो जाएंगे।

बीज एवं बीज सम्प्रभुता के लिये दूसरा खतरा बीजों का आनुवांशिक सम्मिश्रण (प्रदूषण) भी है। जैसे ही किसानों की बीज आपूर्ति रोक दी जाती है और वे पेटेंट किये हुए बीजों पर निर्भर हो जाते हैं, तो उसका नतीजा यही होता है कि वे कर्जदार हो जाते हैं। कपास उत्पादन के लिये मशहूर भारत बीटी कपास बीज के कारण न केवल कपास बीजों की विविधता गंवा बैठा, बल्कि यहां कपास बीज की सम्प्रभुता भी खत्म हो गई। 95 प्रतिशत कपास बीज मोनसेंटो कम्पनी का बीटी कपास है।

हर वर्ष किसानों को बीज खरीदने के लिये मजबूर करके उन्हें कर्ज के जाल में फंसाया जाता है। रॉयल्टी भुगतान नहीं कर पाने के चलते किसान आत्महत्या को मजबूर होते हैं।

यहां तक कि जैव विविधता और बीज सम्प्रभुता के क्षरण ने व्यापक कृषि एवं खाद्य संकट को जन्म दिया है। बीज निगम सरकार पर दबाव डालता है कि वह सार्वजनिक बीज आपूर्ति को खत्म करने और उसके बदले अविश्वसनीय पेटेंट किये हुए बीजों को खरीदने के लिये सार्वजनिक धन का उपयोग करें जिसे हर साल खरीदना होगा।

अमेरिका इसलिये जीएम फूड को बढ़ावा देता है, क्योंकि इसके जरिये उसे रॉयल्टी मिलती है। विश्व व्यापार संगठन में भारत के खिलाफ अमेरिका के पहले विवाद के दौरान भारत पर बीजों के पेटेंट की अनुमति के लिये दबाव डाला गया था। इसीलिए 2004 से भारत भी एक बीज कानून लाना चाह रहा है, जिसमें किसानों को अपने बीज का पंजीयन कराना होगा। अगर यह कानून लागू हो गया तो किसान स्वदेशी बीजों का उपयोग न करने को मजबूर हो जाएंगे। इसके खिलाफ बीज सत्याग्रह तक किया जा चुका है और प्रधानमंत्री को हजारों लोगों के हस्ताक्षर वाला ज्ञापन भी सौंपा गया है। यह समझना पड़ेगा कि अमेरिका पर मोनसेंटो का दबाव और फिर इन दोनों का दुनिया भर की सरकारों पर संयुक्त दबाव बीज खाद्य एवं लोकतंत्र के भविष्य के लिये एक बड़ा खतरा है। ❑

गुजरात के छह संशोधक किसान राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत

राष्ट्रपति भवन में नेशनल ईनोवेशन फाउंडेशन (एनआईएफ) द्वारा विशिष्ट पारम्परिक ज्ञान के क्षेत्र में विशेष कार्य के लिये एनआईएफ पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन किया गया। देशभर से कुल 40 संशोधकों को पुरस्कृत किया गया जिनमें से 6 संशोधक किसान गुजरात से हैं।

श्री नटुभाई वाढेर : कपास के पौधे से रूई एकत्र करने के लिये ट्रेक्टर से चलने वाली मशीन बनाई।

श्री अमृतभाई अग्रावत : मूंगफली निकालने का यंत्र, ऊर्जा बचत करता चूल्हा जैसे अनेक साधनों को नवसंस्कारित किया।

श्री रामजीभाई परमार : आप वैदकीय रूप में विशेष पारम्परिक ज्ञान रखते हैं तथा लगभग 100 वनस्पतियों के ज्ञाता हैं। अपने अनुभव के आधार पर तैयार की गई औषध रामजी के नाम से पेटेंट करवाई है।

भीखाभाई सुरतिया और अहेमदभाई कडीवाला : कपास के पौधे में कोई रोग न लगे इसके लिये सुवा (एक प्रकार का बीज) मिश्रित खेती की असरकारक पद्धति विकसित की है जिससे उत्पादन भी बढ़ता है।

मोगजीभाई डामोर : प्रसिद्ध पशु चिकित्सक पशुओं के फ्रेक्चर का उपचार करने की अपनी मौलिक पद्धति विकसित की है। इन सभी को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया। ❑

अंतरिक्ष विज्ञान में कॅरिअर

❑ डॉ. मनोज चतुर्वेदी

जब किसी क्षेत्र में बने-बनाए मिथक टूटते हैं तो आकर्षण बढ़ना स्वाभाविक है। यह बात नाभिकीय ऊर्जा और स्पेस साईंस पर भी लागू होती है। चंद्रयान प्रथम के सफल अभियान के बाद स्पेस साईंस चर्चा में है। हालांकि अंतरिक्ष में इससे पहले भी भारत ने सैटेलाइट के प्रक्षेपण द्वारा अपनी हुकूमत साबित की हैं लेकिन मून मिशन ने भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा का लोहा पूरे विश्व से मनवाया। आने वाले समय में स्पेस साईंस कॅरिअर के हॉट ऑप्शन के तौर पर सामने आने वाला है।

यह विज्ञान की ऐसी शाखा है जिसमें अंतरिक्ष से जुड़े सारे पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। इस विषय की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसके तहत विभिन्न विषयों मसलन भौतिकी, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, मैटीरियल साइंस, रसायन विज्ञान, बायोलॉजी और कम्प्यूटर साईंस सरीखे विषयों के सिद्धांतों और अनुप्रयोगों का इस्तेमाल होता है। वृहद स्तर पर स्पेस साइंस में चार क्षेत्रों को जोड़कर देखा जा सकता है, एस्ट्रोनॉमी और एस्ट्रोफिजिक्स, पैरामेट्री एटमॉस्फीयर और ऐरोनॉमी, अर्थ साईंस और सोलर सिस्टम स्टडीज। एस्ट्रोनॉमी और एस्ट्रोफिजिक्स में सौर मंडल से जुड़े सिद्धांतों की जानकारी दी जाती है, मसलन सोलर लेयर, चुम्बकीय क्षेत्र से उनका सम्बंध आदि। अर्थ साइंस और सोलर सिस्टम स्टडीज में मौसम, सोलर सिस्टम, ओशियनोग्राफी की जानकारी दी जाती है।

इसके माध्यम से आप मुख्यत: एस्ट्रोफिजिक्स, स्टेलर साइंस, कॉस्मोलॉजी, एस्ट्रोनॉटिक्स, एस्ट्रोफिजिक्स में विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं। एस्ट्रोनॉमी में जहां आप तारों, नक्षत्रों के बारे में गहन जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, वहीं एस्ट्रोफिजिक्स में आप उनके भौतिक गुणों का अध्ययन करते हैं।

भारत में अंतरिक्ष तकनीक में प्रोत्साहन देने के लिये अपने जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) का एक बड़ा हिस्सा अंतरिक्ष अनुसंधान में खर्च करना शुरू कर दिया है। आंकड़ों की मानें तो अंतरिक्ष अनुसंधान पर होने वाले खर्च के आधार पर विश्व में भारत का तीसरा स्थान है। स्पेस सेक्टर में लगातार हो रहे प्रयोगों की वजह से यह सेक्टर लाखों युवाओं के लिये नौकरी की चाबी बनने वाला है। वर्तमान में भारत का ज्यादातर काम कम्युनिकेशन और रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट से सम्बंधित है। इसके साथ ही भारत का अन्य देशों के स्पेस प्रोग्राम के साथ करार भी है। जानकार मानते हैं कि यह ऐसा क्षेत्र होगा, जिसमें एक डॉलर निवेश करने पर दो डॉलर रिटर्न मिलेगा।

भारत में अंतरिक्ष तकनीक में प्रोत्साहन देने के लिये अपने जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) का एक बड़ा हिस्सा अंतरिक्ष अनुसंधान में खर्च करना शुरू कर दिया है। आंकड़ों की मानें तो अंतरिक्ष अनुसंधान पर होने वाले खर्च के आधार पर विश्व में भारत का तीसरा स्थान है। स्पेस सेक्टर में लगातार हो रहे प्रयोगों की वजह से यह सेक्टर लाखों युवाओं के लिये नौकरी की चाबी बनने वाला है।

आने वाले समय में इस सेक्टर में सम्भावनाओं के द्वार खुलने के कई कारण हैं। गौरतलब है कि भारत ने चांद के रहस्यों को खोजने के लिये ही चंद्रयान प्रथम को चांद पर भेजा है। इस अभियान में स्वदेशी लांच व्हीकल का इस्तेमाल किया गया है। 2015 तक चांद पर मानव को भेजने की भारत की योजना है। इसके अलावा सेटेलाइट की दुनिया में भारत की क्षमता को तो पूरे विश्व ने मान ही लिया है। इतनी सम्भावनाओं के बीच आने वाले समय में यह सेक्टर छात्रों के लिये नौकरी के अवसरों की झड़ी लगा देगा। साथ ही चीन और कनाडा के माइक्रोसैटेलाइट विकसित करने के बाद स्पेस वार की बढ़ती सम्भावनाओं से निपटने के लिये बेहतर तकनीक ईजाद करनी होगी। भविष्य में यही स्पेस टेक्नोलॉजी सुरक्षा की गारंटी बनेगी। भारत ने इसके विभिन्न एप्लीकेशन मसलन टेलीकम्युनिकेशन, मैट्रोलॉजिकल सर्विस, वाटर रिसोर्स, मिनरल और इनवॉयर्नमेंटल मॉनिटरिंग टेलीविजन ब्रॉडकास्ट आदि में नए कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

छात्रों को स्पेस साइंस की गहन शिक्षा देने के लिये इंडियन स्पेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक स्वायत्त विश्वविद्यालय है। यहां पर अंडरग्रेजुएट स्तर पर स्पेस टेक्नोलॉजी और इंटीग्रेटेड मास्टर्स इन अप्लायड साइंस जैसे कोर्स ऑफर किये जाते हैं। संस्थान में बैचलर और मास्टर दोनों स्तर पर कोर्स संचालित किये जाते हैं। आईआईएसटी में प्रवेश आईआईटी के लिये आयोजित जेईई के माध्यम से होता है। मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री कोर्स करने के बाद इसमें सीधे प्रवेश भी मिलता है। स्पेस साइंस में कॅरिअर बनाने के लिये आपके पास बारहवीं और स्नातक स्तर पर गणित, भौतिकी और रसायन विज्ञान विषय होना **(शेष पृष्ठ 28 पर)**

बड़ा आदमी

❑ सोमी प्रकाश भुव्वेटा

यार विजय आजकल बहुत भ्रष्टाचार बढ़ गया है। विजय भी हरीश की हां में हां मिलाते हुए गर्दन हिलाता रहा। थोड़ी ही देर बाद पूरे लाव लश्कर के साथ एक नेता जी गुजरते हैं। उसके आगे पीछे लोगों की लम्बी कतार होती है। नेताजी जिन्दाबाद, जिन्दाबाद... जिन्दाबाद के नारे लगते हुए काफिला आगे बढ़ जाता है और नजरों से ओझल हो जाता है। बरबस ही हरीश बोल उठता है। सबसे ज्यादा तो इन नेताओं ने ही बुराई को बढ़ावा दिया है। भ्रष्टाचार भी इन्हीं की वजह से बढ़ रहा है। जो मन करता है। यह सब कर लेते हैं। लेकिन, आम आदमी की कोई नहीं सोचता। विजय ने भी तपाक से हरीश को जवाब दे डाला।

आम जनता का जैसे तूने ठेका ले रखा है। अपने बारे में सोच। विजय की इस नसीहत को हरीश ने हल्के में लिया और फिर बोल उठा। देखना एक दिन मैं एक बहुत बड़ा आदमी बनूंगा और लोग मेरे भी आगे पीछे घूमेंगे। कुछ ही दूरी पर विजय का घर आ गया और हरीश को अलविदा कहते हुए वो अपने घर चला गया। घर जाकर हरीश ने कापी किताबें साइड में रखी और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर फिर से देश के माहौल पर चिंतन करने बैठ गया। परिवार के सदस्यों ने भी हरीश को विक्रम की तरह ही जवाब देते हुए कहा कि आम जनता की सोचना बंद कर और पहले अपना भविष्य बना। खैर, हरीश ने भी अकेले रात का खाना खाया और फिर सो गया।

अब उसे इस बात का अहसास हो चुका था कि वो नेता बन कर अपनी औकात भूल गया था। जिस जनता ने उसे सिर आंखों पर बैठाकर नेता बनाया, उस आम जनता के लिये जब नेता के पास समय नहीं है तो आम जनता भला कैसे नेता को समय देगी।

सुबह झट से उठा और फिर से कालेज की तरफ बढ़ता गया। रास्ते में विजय का साथ मिल गया और फिर से देश में बढ़ती महंगाई और भ्रष्टाचार पर टॉपिक छिड़ गया। विजय और हरीश काफी अच्छे दोस्त थे। इसीलिये एक-दूसरे की भावनाओं की कद्र करते थे। हरीश को भी मजाक मजाक में विजय ने यह कह दिया कि यदि तुम आम आदमी का भला करना ही चाहते हो तो नेता ही क्यों नहीं बन जाते। क्योंकि, आम जनता को राजनीतिक पार्टी के नेताओं के अलावा कोई अन्य नेता चुनने का विकल्प नहीं मिलता है। इसी वजह से ही भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। बातों का सिलसिला चल ही रहा था कि सामने कालेज का गेट आ गया। दोनों ने कालेज में प्रवेश किया। परिसर में सभी विद्यार्थी इकट्ठे होकर आगामी होने वाले कालेज के चुनाव की रणनीति बना रहे थे।

इस दौरान कालेज में केन्द्रीय छात्र संगठन (एससीए) के अध्यक्ष के लिये उम्मीदवार की तलाश थी। विजय ने भी झट से हरीश का नाम सुझाते हुए उसे अध्यक्ष के तौर पर खड़ा करने की बात कह दी। पढ़ने में होशियार और मृदुभाषी हरीश को सभी कालेज के विद्यार्थी भली भांति जानते थे। इसीलिये किसी भी छात्र संगठन ने उसके खिलाफ कोई भी उम्मीदवार चुनाव में नहीं उतारा और हरीश को सर्वसम्मति से एससीए का अध्यक्ष चुन लिया गया। हरीश ने अपने कार्यकाल के दौरान कॉलेज की तमाम समस्याओं को प्रमुखता से उठाते हुए उनका हल करवाया और फिर बीए करने के बाद हरीश ने आगे की पढ़ाई के लिये विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। फिर क्या था यहां पर भी हरीश ने एससीए का चुनाव जीत लिया और फिर देखते ही देखते हरीश राजनीतिक पार्टियों की नजरों में हीरो बन गया। अब हरीश छात्र राजनीति से ऊपर उठना चाहता था। उसकी इच्छा अब राजनीतिक पार्टी में शामिल होने की थी। लेकिन, हरीश को कोई भी राजनीतिक पार्टी अपने साथ नहीं जोड़ना चाहती थी। राजनीतिक पार्टियों को यह भय था कि कहीं हरीश को अपने साथ जोड़ लिया तो उनकी कुर्सी खतरे में पड़ सकती है। थक हारकर, हरीश ने आजाद उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ने का मन बना लिया। फिर क्या था विधाानसभा चुनाव में खूब जोर शोर से कालेज और विश्वविद्यालय के छात्र साथियों ने प्रचार किया और उनकी मेहनत भी रंग लाई। हरीश ने रिकॉर्ड तोड़ वोटों से जीत दर्ज की। इस तरह हरीश चुनाव जीतकर विधानसभा में पहुंच गया। हरीश विधानसभा चुनाव में महज 35 साल की उम्र में विजयश्री हासिल करने वाला एक मात्र विधायक था। फिर क्या था

खुद को आम जनता का हमदर्द बताने वाला हरीश हर दम अपने कार्यकर्ताओं के साथ घिरने लगा। जब भी कहीं कार्यक्रम होता, वहां पर खूब नारेबाजी होती और आगे पीछे खूब समर्थकों की टोली रहती। कुछ ही दिनों बाद विधानसभा सत्र होने वाला था। हरीश ने भी अपने अपने क्षेत्र की तमाम समस्याएं गिनवा दी। जिन्हें बाद में पूरा भी करवाया। फिर क्या था हरीश धीरे-धीरे लोगों में काफी ख्याति अर्जित करता गया। अब राजधानी में उसने अपना बड़ा घर भी बना लिया था। ऐसे में उसने वहां पर रहना भी शुरू कर दिया। धीरे-धीरे हरीश के रहन सहन में बदलाव आने लगा। कभी पैदल चलने वाला हरीश अब लम्बी-लम्बी कारों में घूमने लगा था। शुरुआत में हरीश अपने विधानसभा क्षेत्र में पंद्रह दिन के बाद लोगों से मिलने पहुंचता। इस दौरान वो अपने समर्थकों के साथ मिलकर अपने इलाके की तमाम समस्याओं को जानकर उनका हल करवाता रहा। फिर धीरे-धीरे एक माह और फिर छह माह बाद हरीश अपने विधानसभा क्षेत्र पहुंचने लगा अपने नेता के देरी से पहुंचने पर उनसे मिलने वाले लोगों का काफी भीड़ भड़ाका रहता था। राजधानी में आरामतलबी की जिन्दगी बिताने वाले हरीश को अब धीरे-धीरे ज्यादा लोगों से मिलने में चिढ़ होने लगी। मृदुभाषी कहलाने वाले हरीश की बोलचाल बदल गई थी। कभी मुस्कराते हुए बात करने वाला हरीश खुश्क हो गया था और इस तरह चार साल बीत गए। जैसे ही आगामी विधानसभा चुनाव की सुगबुगाहट शुरू हुई। हरीश अपने विधानसभा क्षेत्र में फिर से पंद्रह-पंद्रह दिन बाद लोगों से मिलने आने लग पड़ा। लेकिन, जितने समर्थक पहला चुनाव जीतने से पहले और उसके बाद एक साल तक हरीश के साथ थे। उनका अब चौथा हिस्सा भी हरीश का साथ देने को तैयार नहीं था और फिर विधानसभा चुनाव करीब आ गए। लोगों ने हरीश के प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक पार्टी के एक शख्स को रिकॉर्ड तोड़ वोटों से जितवाया और हरीश की जमानत जब्त हो गई। हरीश मायूस होकर अपने दो तीन चमचों के साथ घर जा रहा था जबकि उसे हराकर जीतने वाला नेता अपने समर्थकों के साथ पूरे जोश में था। उसके समर्थक जोरदार तरीके से अपने नेता के पक्ष में जिन्दाबाद जिन्दाबाद के नारे लगा रहे थे। आज हरीश उसी कॉलेज के रास्ते से गुजर रहा था जहां से ठीक पंद्रह साल पहले अपने दोस्त विजय के साथ उस रास्ते जाने वाले एक नेता पर टिप्पणी की थी कि नेतागण ही भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। लेकिन, अब उसे इस बात का अहसास हो चुका था कि वो नेता बन कर अपनी औकात भूल गया था। जिस जनता ने उसे सिर आंखों पर बैठाकर नेता बनाया, उस आम जनता के लिये जब नेता के पास समय नहीं है तो आम जनता भला कैसे नेता को समय देगी। नेतागिरी छोड़ स्कूल में शिक्षक बने हरीश ने आज बच्चों को अपने बड़े आदमी बनने की कहानी अपनी जुबानी सुनाई। ❑

इस अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : 1. बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, द्वारिका 2. ऋग्वेद, 3. व्यासदेव, 4. इक्ष्वाकु, 5. अठारह, 6. कोशल राज्य, 7. कलियुग, 8. परशुराम से, 9. अठारह दिन, 10. भीम का।

(पृष्ठ 26 का शेष)

अनिवार्य है। कई विश्वविद्यालय स्पेस साइंस में ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, पोस्ट डॉक्टोरल डिग्री भी करवाते हैं। कई संस्थानों में तो आप साइंस में पी-एच.डी. भी कर सकते हैं। इसरो अपने यहां एमएससी, बीएससी, एमई और पीएचडी योग्यताधारी युवक-युवतियों को अवसर देता है। इसके अलावा इसरो में बीएससी और डिप्लोमाधारी अभ्यर्थियों को भी प्रवेश मिलता है। वहीं स्पेस रिसर्च में डिग्री लेकर आप इसमें सीधे कैरिअर बना सकते हैं।

इस कोर्स को करने के बाद इसरो जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में आपको बतौर गणितज्ञ, आईटी प्रोफेशनल, बायोलॉजिस्ट के रूप में नियुक्ति मिल सकती है। इसके अलावा हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड और एनएएल, डीआरडीओ में काम करने का मौका मिल सकता है। साथ ही स्पेस साइंस और टेक्नोलॉजी से जुड़े संस्थानों में बतौर डाटा प्रोफेशनल, मैकेनिकल इंजीनियर के रूप में काम कर सकते हैं। इसरो की विभिन्न शाखाओं में साइंस और इंजीनियरिंग के स्नातकों को प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, डिवीजन हेड, प्रोजेक्ट डायरेक्टर, ग्रुप डायरेक्टर, डिप्टी डायरेक्टर के पदों पर मौका दिया जाता है। इसके अलावा यहां विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों मसलन इलेक्ट्रॉनिक्स आदि में सर्टिफिकेट प्राप्त लोगों के लिये भी अवसर है। ❑

गंगा से न करें खिलवाड़

❑ डॉ. अंजनी कुमार झा

जीवनदायिनी सरिता पवित्र गंगा भी गलीज राजनीति का शिकार हो गई। साधु-संतों की मुहिम भी कारगर नहीं हो पा रही है। सैकड़ों बार जन-जागृति अभियान भी फौरी साबित हुई। हां, हजारों करोड़ रुपये की बंदरबांट जरूर हुई। पावन सलिला के तट पर कानपुर रोज प्रदूषण का पहाड़ उगलता है। अन्य स्थानों पर शिफ्ट करने की बात भी न कर शुद्धिकरण के नाम पर जरूर करोड़ों रुपये फूंक दिये गए। नेता, सामाजिक संगठन, प्रशासन के अफसरों की जेब पूंजीपति भरते हैं तथा मुट्ठी सरकारी योजना से गर्म होती है। इस शर्मनाक प्रहसन का दुष्परिणाम यह हुआ कि गंगोत्री से निकलते ही यह इलाहाबाद तक पहुंचते ही अपवित्र कर दी गई। कानपुर, वाराणसी, पटना तो जहर उड़ेलने के केन्द्र बन गए। कई विदेशी वैज्ञानिकों ने अनुसंधान के बाद रिपोर्ट दी थी कि पूरी दुनिया में केवल गंगा ही ऐसी नदी है जो पूरी तरह शुद्ध और वर्षों तक ज्यों की त्यों रखी जा सकती है। हमने कुदरत की इस अनुपम भेंट को भी खो दिया। इसकी अक्षुणता को कायम रखने के लिये कई कमेटियां बनी जो कागज ही बर्बाद करती रही।

कई विदेशी वैज्ञानिकों ने अनुसंधान के बाद रिपोर्ट दी थी कि पूरी दुनिया में केवल गंगा ही ऐसी नदी है जो पूरी तरह शुद्ध और वर्षों तक ज्यों की त्यों रखी जा सकती है। हमने कुदरत की इस अनुपम भेंट को भी खो दिया। इसकी अक्षुणता को कायम रखने के लिये कई कमेटियां बनी जो कागज ही बर्बाद करती रही।

राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिक प्राधिकरण का गठन भी पूर्व की भांति बड़े जोश-खरोश के साथ हुआ, किन्तु प्रधानमंत्री ने अध्यक्ष होने के बावजूद फिर जिम्मेदारी दूसरों के ऊपर डाली तो राजेंद्र सिंह समेत कुछ अन्य ने भी इस्तीफा दे दिया। राष्ट्रवादी संगठनों ने इसे अलग-अलग मंचों के जरिये जनता तक अपनी बातें कहनी शुरू की तो अचानक मनमोहन सिंह नींद से जागे। राज्य सरकारों को दोषी ठहराते हुए नए मल-जल शोधन संयंत्रों के प्रस्ताव भेजने का आदेश थमा दिया। फिर दूरदर्शिता के बजाए नौकरशाही ही सतह पर दिखी। डॉ. सिंह ने यह भी जोड़ा कि प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को प्रदूषण रिसाव मानकों के मुताबिक इस पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। राज्य अपनी शक्तियों का भरपूर इस्तेमाल करें। उन्होंने स्वीकारा कि समय हमारे पक्ष में नहीं है। इसे किस रूप का संदेश माना जाए। जनता ने पूरे जोश से सत्ता सौंपी है, तो भला अब क्या हो गया? इसी अक्षमता और मिथ्या अहंकार ने गंगा को 'गंगा' नहीं रहने दिया। पहले उत्तर प्रदेश में बसपा की पूर्ववर्ती सरकार ने इसे धन उपार्जन का माध्यम बनाया और अब सपा की सरकार धन की मांग कर रही है। गंगा अगर पावन हो जाए तो पार्टियों, दलालों की दुकानदारी खत्म हो जाएगी, इसलिये अधिकांश वर्ग इसे गंदा बनाए रखने में जुटे हैं। केवल उत्तर प्रदेश के ही 26 शहर गंगा नदी के तट पर बसे हैं। केन्द्र से स्वीकृत 1341.6 करोड़ रुपये की सात योजनाएं पुन: कागज पर मनरेगा और स्वास्थ्य मिशन की तरह दौड़ रही हैं। अनियंत्रण का दुष्परिणाम हुआ कि हर रोज 29 हजार लाख लीटर से ज्यादा प्रदूषित जल सीधे गंगा नदी में जाता है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार और पश्चिम बंगाल के लिये 2600 करोड़ से अधिक की परियोजनाओं की अनुमति दी जा चुकी है। आईआईटी के समूह के अतिरिक्त, कई कमेटियों की रिपोर्ट भी धूल फांक रही है। गंगा कि अविरल धारा को बनाने की मांग पर डटे स्वामी निगमानंद की शहादत के बाद भी स्वतंत्रता आंदोलन की तरह गंगा मुक्ति अभियान फीका नहीं पड़ा है। करोड़ों भारतीयों और प्रवासियों की जुड़ी आस्था का नतीजा है कि साधु-संत अब जगह-जगह इसे मुद्दा बना रहे हैं। ❑ (लेखक राजनीतिक विश्लेषक और स्तम्भकार हैं)

With best compliments from

WINSOME

Textile Industries Ltd.
sco#191-192, Sector 34-A,
Chandigarh - 160022 (INDIA)

Tel: +91-0172-2603966,
4612000, 4613000
Fax: +91-0172-4614000
website: www.winsomegroup.com

हिमाचल बना चर्च की रणनीति का नया अखाड़ा

❑ डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

ईसाई मिशनरियों द्वारा भारत को मतांतरित करने के प्रयास काफी लम्बे अरसे से चले आ रहे हैं। गोआ में पुर्तगाल के ईसाई मिशनरियों ने मतांतरण का जो आंदोलन डंडे के बल पर चलाया था, कालांतर में शेष भारत में अंग्रेजी राज के दिनों में चर्च ने यही आन्दोलन छल और कपट के आधार पर चलाया। अंग्रेजों के भारत से जाने के वक्त ईसाई मिशनरियों की मुख्य चिंता यही थी कि भविष्य में चर्च मतांतरण की अपनी गतिविधियों को कैसे जारी रख सकेगा?इस मुद्दे को लेकर ईसाई मिशनरियों का एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल महात्मा गांधी से भी मिला था। लेकिन महात्मा गांधी ने इसमें हस्तक्षेप करने से न केवल इनकार किया, बल्कि उन्होंने इसका विरोध भी किया। गांधी जी चर्च द्वारा भारत में किये जा रहे मतांतरण के खिलाफ तो थे ही, वे मिशनरियों द्वारा किये जा रहे सेवा प्रकल्पों को भी मतांतरण का एक माध्यम ही मानते थे। भारत में सात-आठ सौ साल तक इस्लामी ताकतों द्वारा किये गए मतांतरण ने भारत को खंडित कर पाकिस्तान बना दिया था और अब चर्च अपने लिये उसी प्रक्रिया की छूट देने की मांग कर रहा था, भविष्य में जिसके नतीजे खतरनाक निकल सकते थे।

गांधी जी चर्च द्वारा भारत में किये जा रहे मतांतरण के खिलाफ तो थे ही, वे मिशनरियों द्वारा किये जा रहे सेवा प्रकल्पों को भी मतांतरण का एक माध्यम ही मानते थे। अब चर्च अपने लिये उसी प्रक्रिया की छूट देने की मांग कर रहा था, भविष्य में जिसके नतीजे खतरनाक निकल सकते थे।

चर्च के पीछे विदेशी ताकतें

कालांतर में चर्च की गतिविधियों की छानबीन के लिये मध्य प्रदेश की कांग्रेस सरकार द्वारा गठित नियोगी आयोग ने जो रपट प्रस्तुत की वह काफी चौंकाने वाली थी। इसमें धोखाधड़ी के उन तरीकों का भंडाफोड़ किया गया था जिनके माध्यम से चर्च मतांतरण का कार्य कर रहा था। इस रपट को ध्यान में रखते हुए 1967 में मध्य प्रदेश सरकार ने छल-कपट और लालच से मतांतरण को रोकने के लिये 'मध्य प्रदेश पांथिक स्वतंत्रता अधिनियम-1967' पारित किया। इस जैसे प्रयासों के बावजूद चर्च के इस अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र को बहुत समय तक रोका नहीं जा सका, क्योंकि चर्च के पीछे अमरीका समेत अनेक पश्चिमी ताकतों का हाथ था। लेकिन अन्ततः 1977 में सर्वोच्च न्यायालय ने मतांतरण रोकने सम्बंधी तमाम विधेयकों पर अंतिम निर्णय देते हुए इन को जायज ही नहीं ठहराया, बल्कि यह भी कहा कि अपनी बात को प्रचारित करने का अर्थ मतांतरण का अधिकार प्राप्त कर लेना नहीं है। जाहिर है कि ईसाई मिशनरियां अपनी पहली लड़ाई हार चुकी थीं। उसके अगले साल 1978 में पूर्वोत्तर भारत के एक प्रमुख राज्य अरुणाचल प्रदेश ने पांथिक स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया। मतांतरण के काम को तेजी देने के लिये ईसाई मिशनरियों ने जो अलग-अलग नामों से एनजीओ बना रखे थे उनको करोड़ों रुपये की वित्तीय सहायता अमरीका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के अतिरिक्त अनेक पश्चिमी देशों से आ रही थी। अरुणाचल प्रदेश में मतांतरण रोकने के लिये बने इस विधेयक से चर्च का बौखला जाना स्वाभाविक ही था।

सोनिया कांग्रेस और चर्च

कांग्रेस पर सोनिया गांधी का कब्जा हो गया तो ईसाई मिशनरियों ने फौरन अपनी रणनीतियों में भी बदलाव किया। अब उनकी रणनीति यह बनी कि इस प्रकार का वातावरण तैयार किया जाए और परदे के पीछे से ही ऐसी ताकतों को समर्थन दिया जाए जिनके कारण विभिन्न राज्यों की विधान सभाएं मतांतरण को रोकने के लिये अधिनियम ही पारित न कर सकें। सोनिया कांग्रेस इस नई रणनीति में पूरी तरह चर्च के साथ खड़ी दिखाई दे रही थी। यह धीरे-धीरे तब स्पष्ट होने लगा जब तमिलनाडु विधानसभा को बलपूर्वक मतांतरण को रोकने के लिये 2002 में बने अधिनियम को वापिस लेना पड़ा। 2006 में राजस्थान विधानसभा द्वारा पांथिक स्वतंत्रता अधिनियम पारित करने के प्रयासों को इसी पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिये। राजस्थान विधानसभा ने जब ऐसा विधेयक पारित किया तो राज्यपाल ने इस पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। दूसरी बार यही विधेयक राज्यपाल ने राष्ट्रपति के पास भेज दिया। विधेयक पर कहीं राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त न हो जाए इस आशंका को दूर करने के लिये सोनिया कांग्रेस ने राजस्थान की राज्यपाल को ही राष्ट्रपति बना दिया। लेकिन इसे संयोग ही कहना चाहिये कि इसी बीच यानी 2006 में हिमाचल प्रदेश विधानसभा में यह अधिनियम पारित हो गया। ❑

Financial Performance of outcome Budget for DPAP Project Dev. Block Jhandutta up to 31-3-2012

S.N.	Batch	No. of Project	Total Cost	Opening Balance As on 1-4-2011	Central Share	State Share	Instt.	Total	Expenditure Incurred
1.	6th DPAP	8 No.	240 Lacs	53.558	---	14.479	1.772	69.809	58.214
2.	7th -do-	4 No.	120 Lacs	37.362	---	11.028	1.312	49.702	44.193
3.	8th -do-	5 No.	150 Lacs	38.185	---	---	0.988	39.176	34.19
4.	H -1 Haryali	4 No.	120 Lacs	7.782	26.004	---	0.42	34.206	20.133
5.	H -2 -do-	4 No.	120 Lacs	27.614	---	8.669	1.172	37.455	31.584
6.	H -3 -do-	4 No.	120 Lacs	28.139	---	8.458	0.832	37.43	29.619
7.	H -4 -do-	4 No.	120 Lacs	41.887	---	8.505	1.672	52.064	42.492
	Sub. Total	**37 No.**	**1070 Lacs**	**234.54**	**26.004**	**51.139**	**8.168**	**319.842**	**260.425**
1	IWMPIINd	4 No.	349.65 Lacs	7.208	48.01	3.496	1.87	60.584	17.502
2	IWMPVth	2 No.	337.35 Lacs	---	52.261	3.373	0.25	55.884	3.321
	Sub Total	**6 No.**	**687.00**	**7.208**	**61.51**	**6.869**	**2.12**	**116.468**	**20.823**

S.No.	Total Work Sanctioned	No. of Works Completed	No. of works in Progress	Area Treated	Mandays Generated
W.S.	371	246	125	3500 Hect	55974

अमेरिका में शिवलिंगम् की प्राण प्रतिष्ठा

अमेरिका में अमेरिकी हिन्दू एसोसिएशन ने एक महाशिवलिंगम् की स्थापना का निर्णय किया है। हिन्दू टेम्पल कल्चर सेंटर, विस्कॉन्सिन के सहयोग से एफ.एच. रोड, विस्कॉन्सिन में यह महाशिवलिंगम् की स्थापना व प्राणप्रतिष्ठा का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। प्राण प्रतिष्ठा का यह कार्यक्रम पूर्ण हिन्दू संस्कृति के रूप में स्थानीय पुजारियों द्वारा आगामी 25 से 27 मई के मध्य किया जाएगा। इस विशाल शिवलिंगम् एवं नन्दी की मूर्तियों को भारत में विशेष रूप से निर्माण कर मंगाया गया है। ❑

यरुशलम में कथा सुनाएंगे मुरारी बापू

तुलसी के राम अब इस्राइल पहुंच रहे हैं। यहूदियों, इस्राइलों और मुस्लिमों के लिये अति महत्वपूर्ण इस्राइल की राजधानी यरुशलम में रामकथा का आयोजन किया जाएगा। प्रसिद्ध कथा वाचक मुरारी बापू इस शहर में रामकथा की रसधारा बहाएंगे। इसके बाद बापू 4 से 12 अगस्त तक जापान के नागासाकी में कथा सुनाएंगे। बापू की तमन्ना इराक के करबला में भी रामकथा सुनाने की है। इस दिशा में अनापत्ति लेने की तैयारियां चल रही हैं। यरुशलम में बापू की रामकथा एक होटल के सभागार में आयोजित की जा रही है। ❑

अमेरिका में भी है एक हस्तिनापुर

चौंकिये नहीं। दक्षिणी अमेरिकी देश अर्जेंटिना की राजधानी ब्यूनस आयरेस से 50 कि.मी. की दूरी पर 10 मंदिरों का एक परिसर है जिसका नाम हस्तिनापुर रखा गया है।

आप शायद सोचें कि यह परिसर किसी भगवाधारी संन्यासी या महात्मा ने बनवाया होगा, बिल्कुल नहीं। किसी भारतीय धार्मिक या आध्यात्मिक संस्था अथवा प्रवासी भारतीयों ने बनाया होगा, ऐसा भी नहीं है। हस्तिनापुर संस्थान की स्थापना वहां की निवासी सुश्री एदा अलब्रेख्त ने भारतीय दर्शन से प्रभावित होकर की है।

यह परिसर 12 एकड़ में फैला हुआ, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में है। इसमें 10 मंदिर हैं, मुख्य विग्रह श्री गणेश, श्री नारायण, श्री शंकर व सूर्य भगवान के हैं। एक मंदिर पाण्डवों का भी है जो हस्तिनापुर को सार्थक करता है। यह स्थान शहर से दूर अरण्य वातावरण वाला है, जहां पक्षियों की चहचहाहट के अलावा और कोई आवाज नहीं है। हां, भजनों का मंद-मंद संगीत वातावरण को भक्तिमय अवश्य बनाता है। यहां पर भारतीय दर्शन, योग, ध्यान व भक्ति संगीत की कथाएं चलती है।

संस्था से लगभग 100 दर्शनशास्त्र के तथा 120 योग के शिक्षक जुड़े हुए हैं। लगभग 2500 जिज्ञासु विद्यार्थी साप्ताहिक कक्षाओं में पंजीकृत हैं। संस्थान ने श्री गीता, श्रीमद्भागवत् पुराण, भक्ति सूत्र, उपनिषदों एवं योगसूत्र का स्पेनिश भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया है।

यहां की व्यवस्था में कोई संन्यासी, गॉडमैन या गुरु नहीं है, व्यवस्था वालों में कोई इंजीनियर, कोई डॉक्टर या प्रबंधक आदि हैं, वे स्वयंसेवक हैं तथा अपना समय व प्रज्ञा संस्थान को देते हैं। समय-समय पर कार्यशालाएं, गोष्ठियां व उत्सव आयोजित किये जाते हैं। शाकाहारी भोजन की व्यवस्था होती है। यहां योग का त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम चलता है। संस्था से लगभग 100 दर्शनशास्त्र के तथा 120 योग के शिक्षक जुड़े हुए हैं। लगभग 2500 जिज्ञासु विद्यार्थी साप्ताहिक कक्षाओं में पंजीकृत हैं। संस्थान ने श्री गीता, श्रीमद्भागवत् पुराण, भक्ति सूत्र, उपनिषदों एवं योगसूत्र का स्पेनिश भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया है।

आश्चर्य यह भी है कि इस संस्थान की व्यवस्था में जुड़े इंजीनियर, प्रबंधक आदि नि:शुल्क सेवाएं देते हैं। संस्थान के लिये धनसंग्रह भी नहीं किया जाता है। इस स्थान को प्रज्ञा की नगरी कहा जाता है जो एक दम सार्थक है। ❑ (विसंके)

जर्मनी में मिली 32 हजार वर्ष पुरानी नरसिंह की मूर्ति

जर्मनी के लेनेटल प्रदेश में एक प्राचीन गुफा में हाथीदांत से बनी मूर्ति के टुकड़े प्राप्त हुए जिसका मुख सिंह जैसा और शरीर मानव आकृति का है। पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार यह मूर्ति 32000 वर्ष पुरानी है। मूर्ति के टुकड़ों को जोड़ने से 29.6 सेमी लम्बी और 5.6 सेमी चौड़ी जिस मूर्ति ने आकार लिया वह हिरण्यकश्यपु के वध करने को प्रकट हुए नरसिंह भगवान् जैसी लगती है। वास्तव में गुफा में मूर्ति के टुकड़ों की जानकारी 1939 में हो गई थी किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के कारण सभी भूल गए। लेकिन 30 वर्ष बाद 1997 में फिर से कार्य शुरू हुआ और नरसिंह की मूर्ति के अलावा अन्य भी कई मूर्तियां प्राप्त हुईं। ❑

मनुष्य बनाम जानवर

दीर्घकालिक याददाश्त

- क्लार्क्स नटक्रैकर्स (कौवे की एक प्रजाति) पूरे आधे वर्ष तक यह याद रखता है कि उसने बीज कहां छुपाए हैं। वह 15 मील के क्षेत्र में 5 हजार गुप्त भंडारों का प्रयोग बीज रखने हेतु करता है।

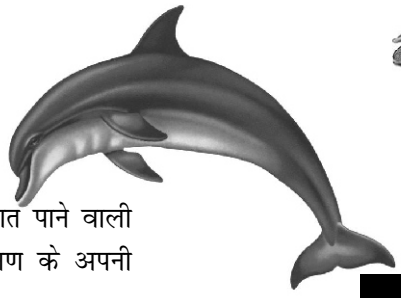

सभ्यता

- एडीलेड डॉल्फिनेरियम में बीमारी से निजात पाने वाली डॉल्फिन्स ने बिना किसी मानवीय प्रशिक्षण के अपनी साथी डॉल्फिन्स से टेल वाक सीखी थी।

खुद के प्रति जागरुकता

- सभी वनमानुष, डॉल्फिन्स, हाथी तथा मैगापई दर्पण में अपना अक्स पहचान सकते हैं। यदि उन्हें कोई असामान्य चीज दिखे तो वे इसे हटाने या घिसने का प्रयास करते हैं।

हास्य भावना

- वन मानुष जंगल में अक्सर चीतों के शावकों के कान, पूंछ खींच कर और उनके झापड़ लगा कर उनका मजाक उड़ाते हैं और बच कर भाग निकलते हैं ताकि दोबारा से फिर ऐसा कर सकें।

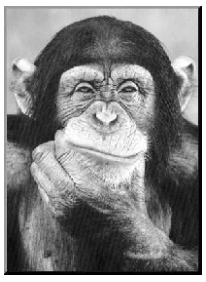

जटिल संचार तथा गणित

- हालांकि चिम्पैंजी बोल कर आपस में संचार नहीं कर सकते फिर भी वे सांकेतिक भाषा का प्रयोग कर सकते हैं। मनुष्यों की तरह ही चिम्पैंजियों में भी गणित सम्बंधी, दिमागी तथा गैर-शाब्दिक निपुणताएं होती हैं।

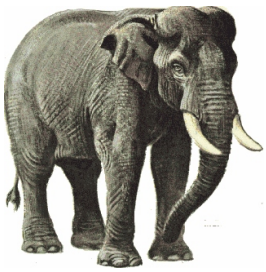

भावनाएं

- अपने झुंड के किसी घायल हाथी के प्रति सहानुभूति जताते हुए हाथी उसका इंतजार करते हैं और उसे भोजन कराते हैं।

नजर

- गिद्दों की नजर मनुष्यों से 8 गुणा अधिक तेज होती है।

आकार

- सबसे बड़े जानवरों में ब्ल्यू व्हेल्स शामिल है। सर्वाधिक वजनी ब्ल्यू व्हेल 190 टन की थी।

श्रवण शक्ति/संचार क्षमता

- बालीनव्हेल्स की ध्वनि 1800 किलोमीटर तक भ्रमण कर सकती है।

राष्ट्रीय मिल्ट्री स्कूल के लिये चयनित हुआ योगेन्द्र

योगेंद्र को सम्मानित करते सरस्वती विद्या मंदिर जोगिंद्रनगर प्रबंधन समिति के प्रबंधक अश्वनी सूद। साथ में प्रधान कृष्ण शर्मा एवं प्रधानाचार्य नवीन शर्मा।

जोगिन्द्रनगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर का छात्र राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता को उत्तीर्ण कर राष्ट्रीय मिल्ट्री स्कूल चायल के लिये चुन लिया गया है। स्कूल के प्रधानाचार्य नवीन शर्मा से मिली जानकारी के अनुसार योगेन्द्र इस क्षेत्र का पहला छात्र है जिसने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए यह मुकाम हासिल किया है। उन्होंने बताया कि योगेन्द्र शिक्षा के साथ अन्य स्कूली गतिविधियों में भी अग्रणी रहा है। हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा आयोजित मेधावी छात्रवृति योजना में भी योगेन्द्र अव्वल रहा है।

योगेन्द्र अपनी इस सफलता का श्रेय अपने शिक्षकों और माता-पिता को देता है। गत दिनों सरस्वती विद्या मंदिर की प्रबंधन समिति ने इस होनहार छात्र को सम्मानित करते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

हंसते-हंसते

☺ सेठ जी का घोड़ा खो गया था और वह बहुत खुश थे। सेठ जी की पत्नी ने पूछा, 'अरे आपका घोड़ा खो गया है और आप खुश हैं?'
सेठ जी, 'मैं इसलिये खुश हूं कि जब घोड़ा खोया तो मैं उसके साथ नहीं था, वर्ना मैं भी खो जाता न...।'

☺ इटली के वैज्ञानिक गैलेलियो ने डिस्कवरी करके कहा कि जमीन सूरज के गिर्द घूमती है, ये बात सुनते ही उस समय की सरकार ने उन्हें उठा कर जेल में डाल दिया।
गैलेलियो हंसा और बोला, 'मुझे जेल में डालने से क्या होगा। जमीन तो फिर भी सूरज के आस-पास ही घूमेगी।'

☺ मोहन अपने दोस्त राकेश से कहता है : देखो दोस्त, 'चूंकि हम लोकतंत्र प्रणाली पर विश्वास रखते हैं इसलिये हमने अपने घर में सुख-शांति बनाए रखने के लिये एक सिस्टम बनाया है। मेरी पत्नी वित्त मंत्री है, मेरी सास रक्षामंत्री मेरे ससुर विदेश मंत्री और साली लोकसम्पर्क मंत्री हैं।'
राकेश, 'आप शायद प्रधानमंत्री होंगे?'
मोहन, नहीं यार, मैं तो बेचारी जनता हूं।

☺ अध्यापक ने दूसरी कक्षा के एक बच्चे से कहा, 'मैंने कल तुम्हें जो पाठ पढ़ाया था उसे सुनाओ।
बच्चों ने कहा, 'सर... आता नहीं है।'
टीचर, 'नहीं आता तो ऐसा करो जो आता है वही सुना दो...?'
बच्चे ने कहा, 'सर...! मुझे तो गाना आता है वही सुना दूं?'

मीठे बोल होते हैं अनमोल

मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जिसे बोलने की शक्ति प्रदान है। मधुर भाषा, सदाचार, कर्तव्य परायणता मनुष्य के शृंगार हैं जिसके द्वारा मनुष्य समाज में अपना स्थान बनाता है। मीठा बोलना, जहां दूसरे व्यक्ति को अच्छा लगता है, वहीं बोलने वाले के मन में भी आत्मशांति का आभास दिलाता है। जी शब्द आसानी से बोला जा सकता है, फिर ओए जैसे कठिन शब्द का प्रयोग क्यों किया जाए?मधुर बोलना, मधुर सोचना, मधुर व्यवहार मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है। मीठा बोलने से दुश्मन भी अपना बनाया जा सकता है। कड़वी बोली मित्र का भी मुंह फेर सकती है। यही कारण है कि कोयल की मधुर आवाज के कारण लोग उससे प्यार करते हैं तथा कौवे की कांव-कांव पर लोग पत्थर मारते हैं। मीठे बोल होते हैं अनमोल, इसके महत्व को समझना, हर व्यक्ति का कर्तव्य है। तभी समाज में समरसता आएगी।

-प्रेमचंद माहिल, हमीरपुर

प्रश्नोत्तरी

1. चार धाम कौन से हैं?
2. सबसे प्राचीन ग्रन्थ का क्या नाम है?
3. श्रीमद्भागवत किसकी रचना है?
4. सूर्यवंश के प्रथम राजा कौन थे?
5. पुराण कितने हैं?
6. अयोध्या किस राज्य की राजधानी थी?
7. द्वापर के पश्चात् कौन सा युग आता है?
8. गुरु द्रोणाचार्य ने शस्त्र विद्या किससे प्राप्त की थी?
9. महाभारत का युद्ध कितने दिन चला?
10. घटोत्कच किसका पुत्र था?

नारद जयंती पर आयोजित पत्रकार गोष्ठी, बद्दी

मंच पर उपस्थित
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के
प्रांत प्रचारक
श्री वनवीर जी,
कार्यक्रम अध्यक्ष
श्री गुरुदेव शर्मा,
मुख्य अतिथि
विकास शुक्ला एवं अन्य

पत्रकार गोष्ठी
में उपस्थिति
पत्रकार
तथा अन्य
गणमान्य जन

कबीर राम न छॉड़िये, तन-धन जाउ त जाउ।
चरन कमल चित बेधिया, रामहि नाम समाउ।।

कबीर जयन्ती पर
हिमाचल वासियों
को
हार्दिक
शुभकामनाएं।

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ा, रहन दो म्यान।।

HP/48/SML (upto 31-12-2014) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

मातृवन्दना

(मासिक)

मातृवन्दना पत्रिका पिछले 18 वर्षों से राष्ट्रीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विचारों को हिमाचल के दूर-दराज के पहाड़ी क्षेत्रों में पहुंचाने हेतु सतत् प्रयत्नशील है। वैसे आज के इस प्रदूषित वातावरण में अच्छा साहित्य उपलब्ध करवाना अपने आप में एक चुनौतिपूर्ण लेकिन अति महत्वपूर्ण कार्य है, परन्तु आज आपके सहयोग से हम यह कार्य कर पा रहे हैं। इसका प्रसार व्यापक तथा हर कोने को छूने वाला है। परिणामस्वरूप मातृवन्दना की प्रसार संख्या 35,000 है तथा प्रदेश में 3 लाख से अधिक पाठक 9 हजार स्थानों पर पत्रिका पढ़ रहे हैं। निकट भविष्य में इसकी प्रसार संख्या 40 हजार से अधिक तक पहुंचाने का हमारा प्रयास है। प्रदेश की सर्वाधिक प्रसारित होने वाली मासिक पत्रिका में आप अपने उद्योग एवं संस्थान का विज्ञापन देकर लाभ उठाएं। विज्ञापन दरें निम्न प्रकार से हैं :

विज्ञापन दरें

वार्षिक (कुल 11 अंक)

पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	रू. 90,000
आधा पृष्ठ (रंगीन)	रू. 50,000
पूर्ण पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	रू. 40,000
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	रू. 20,000

मासिक

पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	रू. 20,000
आधा पृष्ठ (रंगीन)	रू. 10,000
पूर्ण पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	रू. 10,000
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	रू. 6,000
1/4 पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	रू. 3,000

तकनीकी विवरण

आकार छपा पृष्ठ	22 सें.मी.x16 सें.मी.	कॉलम की चौड़ाई	7.5 सें.मी.
कॉलम की लम्बाई	22 सें.	पृष्ठ में कॉलम	2

मातृवन्दना प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला - 171 009, से प्रकाशित।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276